RNI No : CHHHIN/2015/64212 | वर्ष – 02 | अंक – 09 | राजनांदगांव | पृष्ठ 32 आवरण सहित

15 मार्च – 14 अप्रैल, 2017

मूल्य 20 रुपए

नेशन अलर्ट

मासिक पत्रिका

मोदी पर मत बरसे

विधानसभा चुनाव के नतीजों ने जो कुछ भी दिखाया है उसने सुनी हुई सारी बातें भूला दी. इतिहास जो था सो था.. लेकिन, इसमे जो नया अध्याय जुड़ा है वो मोदी युग का है. उन्होंने अपने करिश्माई नेतृत्व का जो असर दिखाया है.

नेशन अलर्ट

ईमानदारी
महंगा शौक है

नया पता, नया ठिकाना
वेबसाईट पर भी

www.nationalert.in

श्री पितृ कृपा से...

मासिक पत्रिका

नेशन अलर्ट

■ वर्ष - 02 ■ अंक - 09 ■ मार्च 2017 ■ पृष्ठ 32 ■ मूल्य 20 रुपए

संपादक: आशीष शर्मा
परामर्शदाता: जरनैल सिंह भाटिया, अतुल श्रीवास्तव, आशीष दुबे, सैय्यद शोएब अली
कार्यकारी संपादक: श्रीमती नीता शर्मा
सहायक संपादक: विक्रम बाजपेयी
संपादकीय सलाहकार: जयदीप शर्मा
ऑपरेशंस संपादक: अशोक शर्मा
फीचर संपादक: आरती शर्मा, रजनी शर्मा
प्रमुख संवाददाता: श्याम शर्मा, सूरज शर्मा
व्यापारिक प्रतिनिधि : राकेश जैन, तुषार साहू
धर्म-आध्यात्म प्रतिनिधि : त्रिलोक सोनी
डिजाइन: वी उपमन्यु
फोटो: जितेंद्र जैन, मनोज देवांगन
संपादकीय एक्जीक्यूटिव: श्रीमती दीनिता शर्मा

विज्ञापन:
सीनियर जनरल मैनेजर: एडी वैष्णव
जनरल मैनेजर: पंकज महेश्वरी
रीजनल मैनेजर: लोकेश सवाणी
सीनियर मैनेजर: हर्षद कुमार

सर्कुलेशन:
स्टेट हेड: पंकज शर्मा
असिस्टेंट जनरल मैनेजर: राजेश शर्मा

प्रोडक्शन:
सीनियर मैनेजर: प्रेमचंद शर्मा
मैनेजर: तेजस कुमार

स्टेट ब्यूरो
छत्तीसगढ़ : धीरेन्द्र शर्मा
दिल्ली एनसीआर : गौरव तिवारी
मध्यप्रदेश : अनिल शर्मा
महाराष्ट्र : अरुण शर्मा
उड़ीसा : आर शर्मा
आंध्रप्रदेश : राकेश शर्मा
तमिलनाडु : नीरज शर्मा

विधि सलाहकार :
रुपेश दुबे, विमल हाजरा

सभी अवैतनिक*

कार्यालय :
'नेशन अलर्ट' प्लॉट नंबर 29, विकास नगर, लखोली, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)
097706-56789 , 097524-11311, 098271-15077
E-mail : nationalertcg@gmail.com

आंचलिक कार्यालय :
धीरेन्द्र शर्मा, सतीमाता मंदिर के पास, सती बाजार,रायपुर (छत्तीसगढ़)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक आशीष शर्मा द्वारा श्री बाबा रामदेव प्रिंटर्स, मकान क्रं. 74, वार्ड नं. 37 रानीसागर पूर्व भाग राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर मकान क्रं. 74, वार्ड नं. 37 रानीसागर पूर्व भाग राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से प्रकाशित - संपादक आशीष शर्मा।

■ सभी विवादों का निपटारा राजनांदगांव की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

इस माह | आवरण कथा

मत बरसे

विधानसभा चुनाव के नतीजों ने जो कुछ भी दिखाया है उसने सुनी हुई सारी बातें भूला दी. इतिहास जो था सो था.. लेकिन, इसमे जो नया अध्याय जुड़ा है वो मोदी युग का है. उन्होंने अपने करिश्माई नेतृत्व का जो असर दिखाया है.

08 बिहार

नीतीश की ख़ुशी का राज...

विधानसभा चुनावों के जो नतीजे आए, उनमें चार राज्यों में भारतीय जनता पार्टी सरकार बनाने में कामयाब रही. इस नतीजे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने वाला माना जा रहा है.

12 मार्केट

ये एक धोखा है

पसंद होना किसे पसंद नहीं! हर इंसान और ब्रैंड चाहता है कि उसे दुनिया भर के लोग इतना पसंद करें कि वह कामयाबी के आसमान पर पहुंच जाए। लेकिन क्या पसंद होने का कोई शॉर्टकट है/ हां, कम-से-कम डिजिटल दुनिया पर तो है और इसे डिजिटल मीडिया मार्केटिंग कहते हैं।

26 हेल्थ

ऐसे बच सकते हैं थाइरॉइड से

अगर आपको लगातार थकान, वजन बढ़ना, सिर चकराना और मांसपेशियों की कमजोरी जैसी समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है तो सावधान हो जाएं। जानें थाइरॉइड की समस्या में क्या करना चाहिए

20 बॉलीवुड

बॉलीवुड में कहां तक जाएगी ये सरोगेसी

जब से करण जौहर ने अपनी ऑटोबायोग्राफी 'एन अनसूटेबल बॉय' के लॉन्च पर पिता बनने की इच्छा जताई थी. तब उन्होंने बच्चा अडॉप्ट करने या सरोगेसी से बच्चे पैदा करने की बात कही थी, तभी से इस खबर के भविष्य में सच साबित होने के कयास लगाने शुरू हो गए थे.

संपादकीय

आशीष शर्मा

हर-हर मोदी, घर-घर मोदी

वर्ष 2014 की झलक वर्ष 2017 में दिखाई दी। 2014 के लोकसभा चुनाव अप्रत्याशित नतीजे देने वाले नहीं थे। सारा देश यह जान रहा था और मान भी रहा था कि मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार चुनाव हार रही है। नतीजा कुछ इसी तरह का रहा। अप्रत्याशित इतना जरुर था कि भाजपा को उम्मीद से ज्यादा सीटें प्राप्त हुई थी। अब बारी 2017 की आती है। 2017 के पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव एक तरह से 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव के सेमीफायनल राऊंड के मैच माने जा रहे थे।

2017 के चुनावों ने देश को नई दिशा और दशा दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए ये चुनाव बेहद महत्वपूर्ण हो चले थे। दरअसल, बिहार विधानसभा चुनाव में सारे प्रयास करने के बाद भी भाजपा को वह सफलता नहीं मिली जो कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व को और अधिक मजबूत बनाती। नीतीश कुमार द्वारा किए गए महागठबंधन के चलते बिहार उनके साथ हो लिया। बिहार से लगे उत्तर प्रदेश इसलिए भी मोदी के लिए भी बेहद महत्वूर्ण हो चले थे क्यूंकि वह इसी राज्य की बनारस लोकसभा सीट से प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मोदी के साथ-साथ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के लिए चुनाव जीने-मरने जैसे हो गए थे। अंततः जीत मोदी-शाह की जोड़ी की हुई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2016 में नोटबंदी की घोषणा की थी। सारे देश में विपक्ष इस बात को जोर-शोर से उठा रहा था कि नोटबंदी से मध्यम व गरीब वर्ग की कमर टूट गई है। विपक्ष का यह भी आरोप था कि नोटबंदी चंद उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए लाई गई थी। राजनीति से जुड़े पंडितों ने तो इसे उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से जोड़कर देखना शुरु कर दिया था। उनका कहना था कि सपा-बसपा की चुनावी तैयारियों को झटका देने के लिए भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा नोटबंदी लाई गई है।

मोदी-शाह के दिल और दिमाग में क्या चल रहा है यह शायद विपक्ष पढ़ नहीं पाया और यहीं उससे गलती हो गई। दोनों की जोड़ी ने विपक्ष को खासकर उत्तर प्रदेश में सोचने का मौका भी नहीं दिया। चुनावी नतीजे बताते हैं कि नोटबंदी दरअसल, मोदी और भाजपा के पक्ष में गई है। अघोषित तौर पर मोदी के नेतृत्व में लड़े गए चुनाव मोदी के नाम पर मुहर माने गए हैं। भाजपा ने न केवल यूपी चुनाव जीता बल्कि उसने उत्तराखंड में भी उस हरीश रावत सरकार के खिलाफ जनमत हासिल किया जिससे वह सुप्रीम कोर्ट में हार गई थी।

इधर, गोवा के नतीजों में भी भाजपा को नकार दिया गया नहीं कह सकते। मणिपुर के नतीजे तो उसके लिए पूर्वोत्तर राज्यों में अपनी पैंठ बनाने की रणनीति का नतीजा कहा जा सकता है। असम के बाद मणिपुर में मिली सफलता भाजपा से ज्यादा कांग्रेस के लिए सोचने-समझने का विषय है। हां, इतना जरुर है कि पंजाब के नतीजे भाजपा-अकालीदल के पक्ष में नहीं आए। वहां 10 सालों से इसी गठबंधन की जो सरकार चल रही थी उसे आप के द्वारा दिए गए झटके के बीच कांग्रेस ने परास्त कर दिया। इसके बावजूद इस बार के चुनाव हर-हर मोदी, घर-घर मोदी कहे जाएंगे क्यूंकि उन्होंने उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के नाम पर जीत लिया है।

★★★

जैसे वे तड़ीपार हों...

कनक तिवारी

फासीवाद और नाजीवाद के संस्थापक प्रतीक जर्मनी के हिटलर और इटली के मुसोलिनी का देह में नहीं विचारों में पुनर्जन्म हुआ है. असाधारण चिंतक राममनोहर लोहिया ने कहा था कौन कहता है पुनर्जन्म नहीं होता. व्यक्ति का नहीं होता होगा लेकिन इतिहास का तो होता है. भले ही वह फीका और मारात्मक हो. आजादी के बाद से ही बस्तर की कोख में प्रवेश करने हिटलर और मुसोलिनी की वैचारिक आत्मा तड़प रही होगी. राजनेताओं और नौकरशाहों ने उद्योगपतियों के साथ मिलकर निमंत्रण भेजा. फासी और नाजी हरकतें नए अवतार में आकर बस्तर में निरीह आदिवासियों की जिंदगियों को मौत के कड़ाह में उबाल रही हैं जैसे इतिहास में पहले हुआ है

हाल ही सुकमा के पुलिस अधीक्षक ने मानव अधिकार कार्यकर्ताओं को मोटरगाड़ी से कुचल देने का नायाब लेकिन फूहड़ नुस्खे की पेशकश की है. यही नादिरशाही पुलिस अधिकारी ब्रिटिश हुकूमत में करते थे. कौन कहता है भारत में लोकतंत्र है. थोड़ा बहुत होगा. बस्तर में तो सिरे से गायब है. आदिवासी स्त्रियां और बच्चियां मनुष्य के जानवर होने की जिंदा प्रयोगशालाएं बना दी गई हैं. जंगलों से विस्थापित होने पर भूमि आवंटन के जरिए बचाने वाला संसदीय कानून ही खानाबदोश बना दिया गया है. आदिवासी पंचायतों को विशेष अधिकार देने का नाटक संसदीय जेहन में तो नहीं होगा लेकिन पुलिस कप्तानों, कलेक्टरों और मातहत अधिकारियों की हेकड़ी में लगातार कोई जिन्न देखने मिलता है. कामुक नौकरशाह, बिगड़े नवाबजादे, विदेशी सैलानी और कलाकार का नकाब ओढ़े व्यापारी बस्तर को यौन संस्थान समझकर आदिवासी बेटियों की अश्लील तस्वीरें खींचने बेचने में महारत हासिल किए हुए हैं. बस्तरिहा वनोपज की एक किलो चिरौंजी को एक किलो नमक के समीकरण में खरीदने बेचने को गणित के विद्वान समझ नहीं पाते हैं.

यह सांस्कतिक टापू मनुष्य की जिज्ञासा, शोध और जानकारी ढूंढ़ने का विश्वविद्यालय रहा है. फादर वेरियर एल्विन, डॉ. हीरालाल, आर.वी.पी.सी. नरोन्हा, ब्रम्हदेव शर्मा, सुंदरलाल त्रिपाठी, लाला जगदलपुरी, हीरालाल शुक्ल, गुलशेर अहमद खां शानी से लेकर मेहरुन्निसा परवेज तक शाल वनों का द्वीप अपने इंसानी मूल्यों के लिए सभ्यता के चेहरे पर टॉर्च की रोशनी का अपना निर्दोष पोचारा फेरता रहता है. बदले में उसके रहवासियों के खिलाफ भारतीय दंड विधान की हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती, लूट, राहजनी जैसे तोहफे चस्पा किए जाते हैं. इसी बीच कुछ स्वयंभू सेवक माओवाद की खाल ओढ़कर बस्तर के जंगलों में सरकारी लापरवाही, बदनीयती और मिली जुली कुष्ती के षड़यंत्र से घुसते गए. आदिवासी आषाढ़ के दूबरे की तरह सरकार और लाल सलाम के बीच सैंडविच बने सभ्य लोगों द्वारा आसानी से लीले जा रहे हैं.

अंगरेजी राजशाही की दिमागी बनावट वाली पुलिस का तो जलवा ही कुछ और है. एक के बाद एक पुलिस अधिकारी आततायी बादशाहों की तरह आते हैं. मनुष्य के अस्तित्व को अपने बूटों तले रौंदकर समाज को अहसास दिलाते हैं कि यही पुलिस कर्म है. अमरीका राष्ट्रपति बुश कहता था जो मेरे साथ नहीं हैं वे मेरे दुश्मन हैं. पुलिस भी तो यही कहती है. उसका हौसला इतना बढ़ गया है कि उसने मानव अधिकार कार्यकताओं, वकीलों, जनप्रतिनिधियों और हर तरह के जनसेवकों के खिलाफ वह आवाज इतिहास से चुराकर अट्टहास करती है जो कभी रावण, कंस या दुर्योधन और नादिरशाह या चंगेजखान की हुआ करती थी. उसकी समझ है समाज में दो तरह के लोग रहते हैं. एक पुलिस और दूसरे वे जो होते तो मनुष्य हैं पर हो यह कि बस केवल जी रहे हैं. यह परिभाषा भोजपुर, रायबरेली के मध्यप्रदेश के बालाघाट में रहे कवि मित्र मधुकर खेर ने गढ़ी थी.

मानव अधिकार का चना जोर गरम जैसा चटपटा मुहावरा संयुक्त राष्ट्र संघ से आयातित हुआ है. भारत ने तो मनुष्य को देवता समझकर आध्यात्मिक अधिकार दिए ही हैं. पूरी दुनिया ने मानव अधिकारों की रक्षा और कायमी के लिए कानून बनाए हैं. भारत में राष्ट्रीय आयोग की अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त चीफ जस्टिस और राज्य अधिकार आयोग के अध्यक्ष हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त चीफ जस्टिस करते हैं. इन्हें अधिकार तो नहीं होते लेकिन कड़ी सिफारिशें सरकारों को भेजकर माहौल तो बना सकते हैं. बस्तर के बड़े पुलिस अधिकारी खुले आम आयोग की अनदेखी करते आंध्रप्रदेश के अस्पताल में भरती हो गए. पेशी तारीख खत्म होते ही व्यवस्था के अनुसार बस्तर से पुलिस मुख्यालय में तुरन्त पदस्थी पा ली. क्या कर पाया आयोग और आगे भी क्या कर पाएगा. एक नौकरशाह के जरिए सीधे प्रधान सेवक से हाथ भी मिला लिया. राज्यपक्षी बस्तर की मैना है या बाज?

सुकमा पुलिस अधीक्षक ने वहां से हटने के लिए क्या जानबूझकर यह शिगूफा छेड़ा होगा? वर्षों पहले शंकर गुहा नियोगी की अगुवाई वाली परिवहन समितियों को राज्य सरकार ने भंग कर दिया था. बहाली के लिए मैंने राजस्व मंडल के अध्यक्ष से बतौर वकील गुहार लगाई. उन्होंने पहले स्थगन दिया. बाद में अपील स्वीकार कर ली. मैंने जिज्ञासा में पूछा. मुख्यमंत्री के मना करने पर भी आपने अपील क्यों मान ली. अधिकारी ने कहा मैंने आप पर नहीं आपने मुझ पर अहसान किया है. सरकार नाराज होकर मुझे ग्वालियर से हटाकर केवल भोपाल भेज सकती है. वही तो मैं चाहता था. जो अधिकारी अंतर्राष्ट्रीय कानून की समझाइश की सरेआम धज्जियां उड़ाए. वह जंगलों से हटकर राजधानी के मुख्यालय में पदस्थ हो गया. मेरी जिज्ञासा दूसरी बार शांत हुई. उसके दिमाग में वही ढाक के तीन पात वाला मुहावरा तो रहेगा ही.

गांधी के शिष्य महादेव देसाई के स्वनामधन्य पुत्र नारायण देसाई की अगुवाई में गांधीवादी प्रतिनिधि मंडल बस्तर गया था. उनकी तौहीन की गई थी. ब्रम्हदेव शर्मा के तो कपड़े उतार लिए गए. पूर्व केन्द्रीय मंत्री अरविन्द नेताम को पुलिस सुरक्षा में जगदलपुर से रायपुर भेजा गया. कई कार्यकताओं, गांधीवादियों, वकीलों, मानव अधिकार संगठनों को बस्तर से बेदखल किया जाता रहा जैसे वे तड़ीपार हों. अधिकारियों की अदला बदली ताश के पत्तों के खेल की तरह होती है. एक आईएएस ने सत्ताधारी पार्टी के पूर्वज के बारे में अज्ञान बताया. दूसरे ने बलात्कारी अभियुक्तों में दलितों, आदिवासियों की ज्यादा संख्या होने पर सामाजिक विडंबना को रेखांकित किया. दोनों को अनुशासन के दायरे में लाकर प्रचारित तौर पर प्रताड़ना की नस्ल की समझाइश देकर माफ किया गया. सुकमा अधीक्षक सरकारी अनुशासन संहिता में मक्खन की तरह तैर रहे हैं. छाछ को बिलोकर मथने का काम मानव अधिकार कार्यकर्ता करते रहेंगे. उनकी किसको परवाह है.

(इस आलेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी विचार हैं. इस आलेख में दी गई किसी भी सूचना की सटीकता, संपूर्णता, व्यावहारिकता अथवा सच्चाई के प्रति संपादक उत्तरदायी नहीं है. इस आलेख में सभी सूचनाएं ज्यों की त्यों प्रस्तुत की गई हैं. इस आलेख में दी गई कोई भी सूचना अथवा तथ्य अथवा व्यक्त किए गए विचार संपादक के नहीं हैं, तथा संपादक उनके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है.

मुश्किल है !

राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को उनके पद से हटाना भाजपा नेतृत्व के लिए अभी भी आसान नहीं है, लेकिन ऐसा करना अब उतना मुश्किल भी नहीं है...

पुलकित भारद्वाज

राजनीति का गढ़ कहे जाने वाले उत्तरप्रदेश में मिली अप्रत्याशित जीत ने अगले लोकसभा चुनावों में भाजपा की वापसी की संभावनाएं कई गुना बढ़ा दी हैं. विधानसभा चुनाव में पार्टी के शानदार प्रदर्शन के बाद उन सभी राज्यों में होली-दीवाली जैसा माहौल देखा गया जहां भाजपा की सरकारें हैं. लेकिन उत्तर प्रदेश से सटे राजस्थान का माहौल ऐसा बिलकुल भी नहीं है. जानकारों के मुताबिक राजस्थान में भाजपा पदाधिकारियों के चेहरों पर वही चिंता देखी जा सकती है जैसी इस समय देश के दूसरे हिस्सों में विपक्षी दलों के चेहरों पर दिखाई दे रही हैं.

राजस्थान की जमीनी स्थिति को जानने वालों का मानना है कि वहां की जनता राज्य सरकार के अब तक के प्रदर्शन से बेहद नाखुश है. साथ ही हर पांच साल में तख्ता पलट करने में राजस्थानी वोटर की महारत भी जगजाहिर है. ऐसे में अगले कुछ महीने राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के लिए बड़े मुश्किल भरे साबित हो सकते हैं. बताया जा रहा है कि अगले विधानसभा चुनावों पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए भाजपा का शीर्ष नेतृत्व जल्द ही यहां के संगठन और सरकार में बड़े बदलाव कर सकता है.

राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को पद से हटाए जाने की बात एक बार फिर राजनैतिक गलियारों में चर्चा का विषय बनी हुई है. लेकिन यह पहली बार नहीं है जब उन्हें हटाए जाने की बातें की जा रही हैं. सबसे पहले इस तरह की खबरें 2014 में सामने आयी थीं जब राजस्थान के उपचुनावों में भाजपा को मुंह की खानी पड़ी थी. उसके बाद से लगातार अलग-अलग वजहों से इस तरह की चचाएं होती रही हैं.

कई विश्लेषक मानते हैं कि इन चचाओं के पीछे वसुंधरा राजे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के असहज रिश्ते ज्यादा जिम्मेदार रहे हैं. जानकारों के मुताबिक राजे और प्रधानमंत्री के बीच की अनबन सबसे पहले 2008 में दुनिया के सामने आयी थी. उस समय राजस्थान-गुजरात की संयुक्त नर्मदा नहर परियोजना के उद्घाटन के समय, एक ही पार्टी से होने के बावजूद, मोदी और राजे ने एक दूसरे के कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लिया था.

हालांकि पांच साल बाद इनके बीच रिश्ते सामान्य होने की खबरें भी खूब सुनने को मिलीं जब दोनों ने एक दूसरे के लिए चुनावों में जमकर प्रचार किया था. मोदी लहर कहें या राजे की मेहनत 2013 में भाजपा ने राजस्थान विधानसभा चुनावों में जबर्दस्त बहुमत हासिल किया. और अपनी लय बरकरार रखते हुए पार्टी ने 2014 के लोकसभा चुनावों में प्रदेश की सभी 25 सीटों पर कब्जा कर लिया. जब इस जीत का श्रेय लेने की बारी आई तो जानकारों के मुताबिक दोनों एक दूसरे को एक बार फिर खटकने लगे. प्रदेश में इस जीत पर अपना-अपना दावा करते राजे और मोदी समर्थक कई मौकों पर एक दूसरे को आंखे तरेरते भी नजर आए. जानकार बताते हैं कि मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे इस जीत को लेकर अप्रत्यक्ष तौर पर अपनी पीठ थपथपाती रही हैं लेकिन खुलकर इस बारे में उन्होंने कभी नहीं बोला.

लोकसभा चुनाव में पार्टी के शानदार प्रदर्शन को देखते हुए वसुंधरा राजे को उम्मीद थी कि उनके पुत्र और झालावाड़ से सांसद दुष्यंत सिंह को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह जरूर मिलेगी. लेकिन ऐसा हुआ नहीं. प्रतिक्रिया के तौर पर वसुंधरा राजे खुद दिल्ली पहुंच गयीं और प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण से पहले राजस्थान से चुने सभी सांसदों की मीटिंग बुलाई. खबरें तो ये थीं कि राजे भाजपा नाराज सांसदों को मनाने के लिए दिल्ली आईं थीं. लेकिन कई जानकारों ने इसे राजे के शक्तिप्रदर्शन के तौर पर भी देखा. बताया जाता है कि तभी से राजे, नरेंद्र मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह की नजरों में किरकरी बनी हुई हैं.

उसके बाद 2014 के उपचुनावों में जब भाजपा को चार में से सिर्फ एक सीट मिली तभी से राजनीतिकारों ने यह कयास लगाना शुरू कर दिया कि प्रदेश में वसुंधरा राजे के दिन लद गए हैं. लेकिन उस समय केंद्र के लिए यह कदम आसान नहीं था. दरअसल उसी समय उत्तर प्रदेश में भी उपचुनाव हुए थे. राजस्थान की तरह वहां भी लोकसभा में जबर्दस्त प्रदर्शन के बावजूद भाजपा उपचुनाव नहीं जीत सकी थी. ऐसे हालात में केंद्र को दोनों राज्यों में समान कार्रवाई करनी पड़ती. इसके अलावा दिल्ली के विधानसभा चुनाव भी सर पर थे.

ऐसे में भाजपा किसी तरह की अंतर्कलह नहीं चाहती थी. यही कारण था कि उस समय राजे को लेकर भाजपा शीर्ष ने चुप्पी साध ली.

लेकिन वसुंधरा राजे आसानी से चुप होने वालों में से नहीं थी. उपचुनाव हारने के अगले महीने ही उन्होंने मीडिया के सामने एक चौंकाने वाला बयान दिया - ह्यकोई व्यक्ति इस गुमान में ना रहे कि उसकी वजह से पार्टी राजस्थान में लोकसभा की 25 और विधानसभा की 163 सीटें जीती हैं. जनता जिताने निकलती है तो दिल खोलकर और हराने निकलती है तो घर भेज देती है.ह्ल हालांकि इस बयान में उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया था लेकिन जानकारों का मानना था कि चुनावों में जीत का सेहरा प्रधानमंत्री के सिर बांधना उन्हें रास नहीं आ रहा था.

इसके अलावा राजे ने केंद्र के महत्वाकांक्षी स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत भी राजस्थान में देरी से की थी. इसके लिए बाद में उनसे दिल्ली की तरफ से जवाब भी मांगा गया. इस मामले में भी उनका रुख किसी विपक्षी मुख्यमंत्री जैसा था. उन्होंने सार्वजनिक तौर पर कहा, ह्ये तो अब कर रहे हैं. हमने अपने बजट में इसका प्रावधान किया है. हमने 2003 में ही झाड़ू लगाकर इसकी शुरूआत कर दी थी. हालांकि केंद्र ने राजे के इस बयान को भी दरकिनार करते हुए इस पर कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दी.

लेकिन उसके बाद 2015 की गर्मियां वसुंधरा राजे के माथे पर पसीना लाने वाली साबित हुईं. ललित मोदी कांड में जब वसुंधरा राजे का नाम उछला तो सभी को लग रहा था कि इस बार केंद्र उन्हें नहीं बख्शेगा. लंबे समय तक केंद्र ने इस पर चुप्पी बनाए रखी और जब राजे की चारों तरफ जमकर किरकिरी हो गयी तब उन्हें क्लीन चिट दी गई. उस वक्त राजे को नही हटाया गया तो इसके पीछे उनकी अपने विधायकों पर जबरदस्त पकड़ भी थी. इसके अलावा पहले ही दिल्ली चुनावों में करारी हार का सामना कर चुकी भाजपा की पूरी नजर बिहार विधानसभा चुनावों पर थी. ऐसे में चुनावों से ठीक पहले राजस्थान में उठाया कोई भी बड़ा कदम बिहार में फूंक-फूंक कर कदम रख रहे मोदी और शाह का ध्यान विचलित कर सकता था.

ललित मोदी मामले से विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का भी नाम जोड़ा जाने लगा. हालांकि यह सही मौका था जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुषमा और राजे जैसी दो प्रबल विरोधियों को हटाकर एक तीर से दो शिकार कर सकते थे. लेकिन पार्टी के दो बड़े नेताओं को पद से एक साथ हटाने पर विपक्ष के आरोपों के सही साबित होने का खतरा था. जो कि बिहार चुनाव में पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचा सकता था. इस तरह मुख्यमंत्री राजे भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का कोप भाजन होने से एक बार

फिर बच गयीं.

लेकिन वसुंधरा राजे आसानी से चुप होने वालों में से नहीं थी. उपचुनाव हारने के अगले महीने ही उन्होंने मीडिया के सामने एक चौंकाने वाला बयान दिया - ह्यकोई व्यक्ति इस गुमान में ना रहे कि उसकी वजह से पार्टी राजस्थान में लोकसभा की 25 और विधानसभा की 163 सीटें जीती हैं. जनता जिताने निकलती है तो दिल खोलकर और हराने निकलती है तो घर भेज देती है.ह्ल हालांकि इस बयान में उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया था लेकिन जानकारों का मानना था कि चुनावों में जीत का सेहरा प्रधानमंत्री के सिर बांधना उन्हें रास नहीं आ रहा था.

इसके अलावा राजे ने केंद्र के महत्वाकांक्षी स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत भी राजस्थान में देरी से की थी. इसके लिए बाद में उनसे दिल्ली की तरफ से जवाब भी मांगा गया. इस मामले में भी उनका रुख किसी विपक्षी मुख्यमंत्री जैसा था. उन्होंने सार्वजनिक तौर पर कहा, ह्ये तो अब कर रहे हैं. हमने अपने बजट में इसका प्रावधान किया है. हमने 2003 में ही झाड़ू लगाकर इसकी शुरूआत कर दी थी. हालांकि केंद्र ने राजे के इस बयान को भी दरकिनार करते हुए इस पर कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दी.

लेकिन उसके बाद 2015 की गर्मियां वसुंधरा राजे के माथे पर पसीना लाने वाली साबित हुईं. ललित मोदी कांड में जब वसुंधरा राजे का नाम उछला तो सभी को लग रहा था कि इस बार केंद्र उन्हें नहीं बख्शेगा. लंबे समय तक केंद्र ने इस पर चुप्पी बनाए रखी और जब राजे की चारों तरफ जमकर किरकिरी हो गयी तब उन्हें क्लीन चिट दी गई. उस वक्त राजे को नही हटाया गया तो इसके पीछे उनकी अपने विधायकों पर जबरदस्त पकड़ भी थी. इसके अलावा पहले ही दिल्ली चुनावों में करारी हार का सामना कर चुकी भाजपा की पूरी नजर बिहार विधानसभा चुनावों पर थी. ऐसे में चुनावों से ठीक पहले राजस्थान में उठाया कोई भी बड़ा कदम बिहार में फूंक-फूंक कर कदम रख रहे मोदी और शाह का ध्यान विचलित कर सकता था.

ललित मोदी मामले से विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का भी नाम जोड़ा जाने लगा. हालांकि यह सही मौका था जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुषमा और राजे जैसी दो प्रबल विरोधियों को हटाकर एक तीर से दो शिकार कर सकते थे. लेकिन पार्टी के दो बड़े नेताओं को पद से एक साथ हटाने पर विपक्ष के आरोपों के सही साबित होने का खतरा था. जो कि बिहार चुनाव में पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचा सकता था. इस तरह मुख्यमंत्री राजे भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का कोप भाजन होने से एक बार फिर बच गयीं.

जानकार यह भी कह रहे हैं कि केंद्र राजे को हटाने के बाद राजस्थान के मंत्रिमंडल समेत प्रदेश संगठन के शीर्ष पदों पर भी महत्वपूर्ण बदलाव कर सकता है. मंत्रिमंडल की बात की जाए तो उन विधायकों को नई जिम्मेदारी सौंपी जा सकती हैं जो वोट बैंक के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं और कोई पद न मिलने के कारण अंदरूनी तौर पर असंतुष्ट हैं. इसके अलावा प्रदेश स्तर पर कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभालने के लिए उन चेहरों को भी सामने लाया जा सकता है जिन पर आरएसएस अपनी सहमति देगा. अभी की बात की जाए तो संघ के कुछ चुनिंदा नेता ही इस समय महत्वपूर्ण पदों पर मौजूद हैं और उन्हें भी सिर्फ संगठन के दवाब के चलते ही मंत्रिमंडल में जगह मिली हुई है.

चुनौती भी कम नहीं हैं

खबरें चाहे जितनी उड़ें लेकिन कुछ जानकारों का मानना है कि मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को पद से हटाना केंद्र के लिए अब भी उतना आसान नहीं है जितना समझा जा रहा है. यदि राजे के राजनैतिक इतिहास पर नजर डाली जाए तो उनका नाम उन चंद नेताओं में शुमार है जो खुले तौर पर अपनी ही पार्टी के शीर्ष का विरोध करने के लिए जाने जाते हैं. ऐसा ही एक मामला 2009 में सामने आया था जब विधानसभा और लोकसभा में पार्टी के बुरे प्रदर्शन के बाद ओम माथुर और संगठन मंत्री प्रकाश चंद गुप्ता को नैतिक जिम्मेदारी के चलते अपना पद छोड़ना पड़ा था. लेकिन राजे ने ऐसा करने के बजाय दिल्ली जाकर शक्ति प्रदर्शन किया था. हालांकि बाद में उन्होंने अपना इस्तीफा सौंप दिया था लेकिन पार्टी में उनका कद विद्रोही नेता के तौर पर अधिक मजबूत हो गया. ऐसे में देखने वाली बात यह होगी कि मोदी-शाह की जोड़ी ऐसी कौन सी युक्ति निकालेगी जिससे राजस्थान में सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे.

नीतीश की खुशी का राज भाजपा है

हिमांशु शेखर

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के जो नतीजे आए, उनमें चार राज्यों में भारतीय जनता पार्टी सरकार बनाने में कामयाब रही. इस नतीजे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने वाला माना जा रहा है. विपक्षी नेता भी यह मान रहे हैं कि 2019 के लोकसभा चुनावों में उनका मुकाबला करना आसान नहीं होगा.

लेकिन इन चुनावी नतीजों में एक बात यह भी छिपी हुई है कि ये नतीजे बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लिए भी राजनीतिक तौर पर बेहद अनुकूल हैं. इसकी एक नहीं बल्कि कई वजहें हैं.

सबसे पहली बात तो यह है कि जनता दल यूनाइटेड यानी जेडीयू के सर्वेसर्वा नीतीश कुमार ने एकदम अंतिम समय में यह निर्णय लिया कि उनकी पार्टी उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में अपने उम्मीदवार नहीं उतारेगी. जबकि इसके पहले वे सूबे में कई सभाएं कर चुके थे. उन्होंने दम लगाकर यह कोशिश की थी कि उनका अजित सिंह की अगुवाई वाले राष्ट्रीय लोक दल और समान विचार वाले अन्य किसी दल से गठबंधन हो जाए.

अब उत्तर प्रदेश के चुनावी नतीजों के आने के बाद यह कहा जा रहा है कि यहां के चुनावी मैदान से हटने का निर्णय नीतीश का मास्टर स्ट्रोक था. अगर उनकी पार्टी चुनावी लड़ी होती तो इस तरह के नतीजों के बाद उनकी भी सियासी फजीहत होती. लेकिन अब यह कहा जा रहा है कि उन्होंने पहले से ही भांप लिया था और यही वजह है कि वे उत्तर प्रदेश से अलग हो गए थे.

जानकारों के मुताबिक अगर अखिलेश यादव की अगुवाई में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन को बहुमत मिल गया होता तो नरेंद्र मोदी से मुकाबले के लिए विपक्ष के जिन चेहरों के पीछे गोलबंद होने की संभावना है, उसके तगड़े दावेदार अखिलेश हो जाते. ऐसी स्थिति में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की छवि भी मजबूत होती. इस जीत का श्रेय जहां समाजवादी पार्टी और गैर कांग्रेसी विपक्षी दल अखिलेश यादव को देते, वहीं कांग्रेस पूरा का पूरा श्रेय राहुल गांधी को देती. मतलब साफ है कि अखिलेश और राहुल दोनों मजबूत होते और यह स्थिति नीतीश के अनुकूल नहीं होती. विपक्ष के सबसे स्वीकार्य और मजबूत चेहरे के तौर पर उनकी जो छवि बनी हुई है, वह थोड़ी कमजोर हो जाती.

पंजाब से भी अनुकूल नतीजे

नीतीश कुमार के अनुकूल नतीजे पंजाब में भी आए. कहां तो ये अटकलें थीं कि पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने जा रही है. लेकिन नतीजे कांग्रेस के कैप्टन अमरिंदर सिंह के पक्ष में आए. अगर पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार बनाने में कामयाब होती तो इसका पूरा श्रेय पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को दिया जाता. यह कहा जाता कि उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में मोदी की आंधी के बावजूद पंजाब में केजरीवाल ने उन्हें निष्प्रभावी बना दिया. ऐसे में 2019 में विपक्ष की अगुवाई करने के लिहाज से वे भी एक प्रबल दावेदार हो जाते. यह स्थिति नीतीश के लिए उतनी अनुकूल नहीं होती जितनी आज है.

नीतीश कुमार के बारे में यह बात भी आ रही है कि एक ऐसे दौर में जब ज्यादातर विपक्षी दल नरेंद्र मोदी की राजनीति को न तो समझ पा रहे हैं और न उसका मुकाबला ठीक से कर पा रहे हैं, नीतीश यह काम बखूबी कर रहे हैं. जब नोटबंदी के मसले पर पूरा विपक्ष नरेंद्र मोदी पर हमलावर रुख अपनाए हुआ था, तब नीतीश कुमार नोटबंदी के समर्थन में खड़े हो गए. नीतीश ने इस बात की भी परवाह नहीं कि उन्हीं की पार्टी के वरिष्ठ नेता शरद यादव दिल्ली में नोटबंदी का विरोध कर रहे नेताओं के साथ खड़े हैं.

विधानसभा चुनावों के नतीजे यह साबित कर रहे हैं कि नोटबंदी को मतदाताओं ने कोई नकारात्मक मुद्दा नहीं माना. बल्कि अब तो यह भी लग रहा है कि नोटबंदी को एक सकारात्मक कदम मानते हुए लोगों ने इस वजह से भी भाजपा के पक्ष में मतदान किया. अब राजनीतिक जानकार यह कह रहे हैं कि नीतीश को छोड़कर विपक्ष का कोई भी नेता इस बात को नहीं समझ पाया था. विधानसभा चुनावों के नतीजे आने के बाद भी नीतीश ने कहा कि विपक्ष द्वारा नोटबंदी का बहुत ज्यादा विरोध करने से भी मतदाता भाजपा के पक्ष में गोलबंद हुए.

यह कहा जा रहा था कि 2019 के लोकसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी के मुकाबले नीतीश कुमार विपक्ष की अगुवाई करते दिख सकते हैं. हालांकि, हाल तक इस भूमिका पर अरविंद केजरीवाल और अखिलेश यादव की भी दावेदारी थी. लेकिन अब जिस तरह के चुनावी नतीजे आए हैं, उसमें ये दोनों इस दौड़ से बाहर हो गए दिख रहे हैं. अखिलेश को अभी अपनी पार्टी और परिवार में ही कई तरह की चुनौतियों से निपटना है. वहीं अरविंद केजरीवाल को भाजपा दिल्ली नगर निगम के चुनावों में घेरने और दिल्ली में ही राजनीतिक तौर पर निपटाने की कोशिश में जोर-शोर से जुट गई है. उधर, कांग्रेस में भी अंदर से नेतृत्व को लेकर सवाल उठ रहे हैं. ऐसे में दूसरे दल 2019 के लिए राहुल गांधी के नेतृत्व को मानेंगे, यह अभी की स्थिति में बहुत मुश्किल लगता है.

भले ही तमिलनाडु की मुख्यमंत्री रही जयललिता की नरेंद्र मोदी से नजदीकी रही हो, फिर भी विपक्ष उनकी ओर उम्मीद की निगाह से देखता था. लेकिन अब वे भी नहीं हैं. नवीन पटनायक की स्थिति ओडिशा के अंदर ही कमजोर होती जा रही है. वहीं ममता बनर्जी पर कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दल कोई दांव खेलें, यह मुश्किल लगता है. कुल मिलाकर अभी की जो राजनीतिक स्थिति है, उसमें विपक्ष के पास 2019 में मोदी से मुकाबला करने की स्थिति में खुद को बनाए रखने के लिए नीतीश कुमार की अगुवाई में एकजुट होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं दिखता.

तो भारत तबाह कर देगा..!

श्रुति दीक्षित

दूसरे विश्व युद्ध का अंत जापान पर परमाणु हमले के साथ हो गया था. लेकिन उसके बाद से दुनिया ने जिस तरह जंगों की तैयारी की है, लगता है जैसे तीसरे युद्ध की शुरूआत ही परमाणु हमले के साथ होगी. और इस महाविनाश की कहानी में सबसे ज?यादा योगदान वे देंगे, जो अपने पड़ोसियों को लेकर सबसे जहरीले मंसूबे रखते हैं. ऐसे देशों में सबसे ऊपर है नॉर्थ कोरिया.

अब एक नजर ताजा खबर पर, नॉर्थ कोरिया की तरफ से एक बार फिर बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया गया है. इस बार तो नॉर्थ कोरिया ने 4 मिसाइलें एक साथ दाग दी हैं. इनमें से तीन जापान के समुद्र में गिरी हैं और एक दक्षिण कोरिया की ओर. पिछले महीने भी किम जोंग उन साहब की देखरेख में एक मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया था. अब कहा जा रहा है कि नई मिसाइल इतनी ताकतवर है कि अमेरिका तक पहुंच सकती है. इतना ही नहीं पिछले महीने हुए मिसाइल टेस्ट की यूएन (संयुक्त राष्ट्र) ने निंदा भी की थी और नॉर्थ कोरिया पर मिसाइल परीक्षण पर बैन लगा दिया था, लेकिन किम कहां मानने वाले हैं किसी बैन को. खैर, ये तो हुई नॉर्थ कोरिया की बात, लेकिन जिस तरह से पूरी दुनिया में काम चल रहा है ऐसा लगता है कि न्यूक्लियर ताकत वाले सभी देश खुद को सुप्रीम साबित करने में लगे हुए हैं. अब देखिए दो विश्व युद्ध तो हो चुके हैं, लेकिन तीसरे को लंबे समय से रोका जा रहा है. इसे रोकने की वजह विश्व शांती तो है ही, लेकिन इसके अलावा अगर देखें तो तीसरा विश्व युद्ध महा विनाशकारी साबित हो सकता है. कुल मिलाकर 9 देशों के पास न्यूक्लियर हथियार हैं जो तबाही मचाने के लिए काफी हैं.

रूस

सबसे ज्यादा न्यूक्लियर हथियारों के साथ रूस एक ऐसा देश है जो तीसरे विश्व युद्ध में सबसे शक्तिशाली साबित होगा. फेड्रेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट की रिसर्च के अनुसार रूस के पास 7300 न्यूक्लियर हथियार हैं. इनमें से 1790 काम करने लायक हालत में हैं. 4490 रिटायर हो चुके हैं. रूस ने 715 टेस्ट किए हैं. 1949 में पहला टेस्ट हुआ था और सबसे नजदीकी टेस्ट 1990 में हुआ था. रूस की सबसे खतरनाक मिसाइल रर-18 है. यह एक मिसाइल पूरे न्यूयार्क राज्य, न सिर्फ शहर को, पलक झपकते तबाह कर सकती है. नाटो ने इस मिलाइल का नाम सैटेन दिया है क्योंकि यह दस न्यूक्लियर बम से लैस और इसकी तबाही हिरोशिमा पर गिरे बम से लगभग डेढ़ हजार गुना है.

अमेरिका

दूसरे नंबर पर है अमेरिका जहां कुल 6970 न्यूक्लियर हथियार है जिनमें से 1750 हथियार काम करते हैं. 4670 हथियार रिटायर हो चुके हैं और करीब 1030 को टेस्ट किया गया है. पहला टेस्ट 1945 में किया गया था और सबसे ताजा टेस्ट 1992 में किया गया था. अमेरिका की तैयारी का अंदाजा इसी बात से लगता है कि अब तक दो अमेरिकी प्रेसिडेंट बिल क्लिंटन और जिमी कार्टर न्यूक्लियर हमला करने के लिए जरूर कोड कार्ड गुम कर चुके हैं. खासतौर से क्लिंटन ने तो कई महीनों तक सूट के साथ कार्ड को ड्राई क्लीनिंग के लिए दे दिया था.

चीन

चीन के पास रूस और अमेरिका से काफी कम मात्रा में न्यूक्लियर हथियार हैं. चीन के पास कुल 260 न्यूक्लियर हथियार हैं. इनमें से एक भी फिलहाल काम का नहीं है. रिटायर करने के लिए पूरे हथियार हैं. न्यूक्लियर हथियारों का पहला परीक्षण 1964 में किया था और सबसे ताजा टेस्ट 1996 में किया गया था.

भारत

भारत भी एक परमाणु शक्ति है. 1999 में भारत के पास करीब 800 किलो रिएक्टर ग्रेड प्लूटोनियम था और 8300 किलो सिविलियन प्यूटोनियम. ये सामान करीब 1000 न्यूक्लियर हथियारों के लिए काफी था, लेकिन फिर भी भारत में सिर्फ 110 न्यूक्लियर हथियार ही हैं और इनमें से कोई भी अभी काम का नहीं हैं. भारत ने न्यूक्लियर मिसाइल का पहला टेस्ट 1974 में किया था और अंतिम 1998 में.

इसराइल

इसराइल के पास करीब 80 न्यूक्लियर हथियार हैं और इनमें से एक भी काम का नहीं है. अभी तक कोई भी कनफर्म न्यूक्लियर टेस्ट इसराइल की तरफ से नहीं किया गया है.

फ्रांस

फ्रांस के पास करीब 300 न्यूक्लियर हथियार हैं और इनमें से 280 काम भी करते हैं. कम न्यूक्लियर हथियारों की लिस्ट में एक फ्रांस ही है जिसने सबसे ज्यादा न्यूक्लियर टेस्ट किए हैं. फ्रांस 210 बार न्यूक्लियर मिसाइल का परीक्षण कर चुका है. फ्रांस के पास 10 ऐसे हथियार हैं जिन्हें रिटायर किया जा सकता है. इसके अलावा, फ्रांस ने पहला टेस्ट 1960 में किया था और सबसे ताजा न्यूक्लियर टेस्ट 1996 में किया गया है.

नॉर्थ कोरिया

न्यूक्लियर हथियार रखने वाले सबसे खतरनाक देशों में से एक नॉर्थ कोरिया भी साबित हो सकता है. वजह ये है कि किसी को भी पता नहीं कि इस देश को पास कितने न्यूक्लियर हथियार हैं. लगातार हो रहे परीक्षण से ये साबित होता है कि नॉर्थ कोरिया अपने हथियारों के काफिले को बढ़ा रहा है. 2016 तक नॉर्थ कोरिया ने 4 टेस्ट कर लिए थे.

पाकिस्तान

पाकिस्तान भी एक परमाणु ताकत है. पाकिस्तान के पास कुल 110 से 130 न्यूक्लियर हथियार होने की आशंका है. इसके अलावा, इनमें से एक भी अभी काम करने लायक हालत में नहीं है. पाकिस्तान ने कुल 2 टेस्ट किए हैं जिनमें से पहले 28 मई 1998 में हुआ था और दूसरा 30 मई 1998 में.

यूनाइटेड किंगडम

यूके के पास भी 215 न्यूक्लिर हथियार हैं और इनमें से 120 हथियार काम करने लायक हालत में हैं. 95 ऐसे हैं जो काम नहीं कर सकते. यूके ने करीब 45 बार टेस्ट किए हैं जिनमें से पहला टेस्ट 1952 में किया गया था और सबसे ताजा 1991 में किया गया था.

जनसंख्या के इस गणित का सच क्या है

2050 तक भारत दुनिया में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा. इसके अलावा इस सदी के अंत तक इस्लाम को मानने वालों की संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा होगी. आंकड़ों के विश्लेषण के लिए चर्चित एक अमेरिकी संस्था प्यू रिसर्च सेंटर (पीआरसी) की एक ताजा रिपोर्ट में यह बात कही गई है. सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाले देशों की सूची में भारत अभी इंडोनेशिया के बाद दूसरे नंबर पर है.

इस सदी के आखिर तक दुनिया में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी भारत में रह रही होगी. लेकिन क्या यह हिंदू समुदाय को भी पीछे छोड़ देगी ?

पीआरसी के मुताबिक 2010 में दुनिया की आबादी में 23 फीसदी हिस्सा मुस्लिम समुदाय का था. इस लिहाज से वे ईसाइयों के बाद दूसरे नंबर पर हैं. लेकिन समुदाय की तेजी से बढ़ रही आबादी के चलते 21वीं सदी के अंत तक उनकी आबादी सबसे ज्यादा हो जाएगी.

पीआरसी ने मुस्लिम समुदाय की आबादी बढ़ने के दो प्रमुख कारण गिनाए हैं-पहला यह है कि उसकी जनसंख्या वृद्धि दर बाकी धर्मों के लोगों से ज्यादा है. वैश्विक स्तर पर देखें तो समुदाय में प्रति महिला जनन दर 3.1 है जबकि बाकी धर्मों में यह आंकड़ा 2.3 है.

मुस्लिम समुदाय की आबादी बढ़ने का दूसरा कारण उसकी आबादी का अपेक्षाकृत युवा होना है. 2010 में मुसलमानों की औसत उम्र महज 23 साल थी जबकि गैर-मुसलमानों की 30 साल. संस्था का मानना है कि सबसे ज्यादा प्रजनन दर और सबसे ज्यादा युवा आबादी के कारण मुसलमानों की आबादी तेजी से बढ़ सकती है.

इस रिपोर्ट के आकलनों का दायरा इस सदी के आखिर तक जाता है. रिपोर्ट के आंकड़ों पर जाएं तो तब तक भारत को दुनिया में सर्वाधिक मुस्लिम आबादी वाला देश बने 50 साल हो चुके होंगे. तो क्या ऐसा हो सकता है कि तब तक या इसके कुछ समय बाद भारत में मुसलमानों की आबादी हिंदुओं से ज्यादा हो जाए?

अगर हिंदू जागे नहीं तो अपने ही देश में अल्पसंख्यक हो जाएंगे, यह और इससे मिलते-जुलते वाक्य विश्व हिंदू परिषद जैसे तमाम भगवा संगठन अक्सर ही दुहराते रहते हैं. अपने इस प्रचार के तहत वे तो यहां तक दावा करते हैं कि आबादी के मामले में 2035 तक ही मुसलमान हिंदुओं को पीछे छोड़ सकते हैं. ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने संबंधी बयान, घर वापसी अभियान और धर्मांतरण जैसे जो मुद्दे अक्सर चर्चा में आते रहते हैं, उनके कुछ तार इस प्रचार भी से जुड़ते हैं.

क्या ऐसा वास्तव में हो सकता है कि 2035 तक भारत में मुसलमानों की आबादी हिंदुओं से ज्यादा हो जाए? अलग-अलग स्रोतों से जुटाए गए आंकड़ों का विश्लेषण किया जाए तो संकेत मिलता है कि 2035 तो क्या अगले 100 साल तक भी इसकी दूर-दूर तक कोई संभावना नहीं है. यह विश्लेषण इशारा करता है कि कुल आबादी में मुसलमानों का अनुपात तो बढ़ेगा

लेकिन ऐसा होने की संभावना न के बराबर है कि भारत में उनकी आबादी हिंदुओं से ज्यादा हो जाए.

भगवा संगठनों के प्रचार का एक आधार 2010 में आई इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पापुलेशन स्टडीज (आइआइपीएस) की एक रिपोर्ट भी है. इसमें कहा गया है कि 1961 में कुल आबादी में हिंदुओं का हिस्सा 83.5 फीसदी होता था. 2011 की सामाजिक-आर्थिक जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि उस साल तक यह आंकड़ा 79.8 हो गया था. यह 3.7 फीसदी की गिरावट है. इसके उलट, 1961 में कुल आबादी में मुसलमानों का हिस्सा 10.7 फीसदी था जो 2001 में 2.7 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 13.4 फीसदी हो गया. 2011 के आंकड़े बताते हैं कि भारत की कुल आबादी में मुस्लिम समुदाय की हिस्सेदारी 14.2 फीसदी हो गई है.

प्यू की एक और रिपोर्ट बताती है कि 2030 तक भारत में मुसलमानों की आबादी 23.6 करोड़ हो जाएगी. 2010 में यह 17.7 करोड़ थी. अब खत्म हो चुके योजना आयोग ने कुछ समय पहले एक रिपोर्ट जारी की थी. इसके आंकड़ों के मुताबिक 2050 तक भारत की जनसंख्या एक अरब 63 करोड़ तक पहुंचने की बात कही गई थी. कई जानकार मानते हैं कि तब तक कुल आबादी में मुस्लिम जनसंख्या की भागीदारी बढ़कर 16 फीसदी तक पहुंच सकती है. तब भी यह आंकड़ा करीब 26 करोड़ बैठता है.

जनसंख्या का बढ़ना इस पर निर्भर करता है कि एक महिला अपने जीवनकाल में कितने बच्चों को जन्म देती है. इस संदर्भ में एक समाज के औसत आंकड़े को विशेषज्ञ कुल प्रजनन दर या टोटल फर्टिलिटी रेट (टीएफआर) से परिभाषित करते हैं. अगर एक महिला अपने जीवनकाल में दो संतानों को जन्म देती है तो इसका मतलब यह है कि माता-पिता की मौत के बाद ये संतानें उनकी जगह लेंगी. यानी प्रजनन दर अगर दो है तो यह आबादी के स्थिर होने का संकेत है. हालांकि थोड़ी सी छूट लेते हुए आबादी की स्थिरता के लिए यह आंकड़ा 2.1 माना जाता है. 2011 में भारत के मुस्लिम समुदाय के लिए प्रजनन दर का आंकड़ा 2.7 था जबकि 2005-06 में यह 3.4 था. यानी हिंदुओं के साथ मुस्लिम समुदाय की आबादी में बढ़ोतरी की रफ्तार भी कम हो रही है.

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के आंकड़े भी इस बात को वजन देते हैं. पहला एनएफएचएस 1991-92 में हुआ था. दूसरा 1998-99 में और तीसरा 2005-06 में. 1991-92 में हिंदू महिलाओं के लिए प्रजनन दर 3.3 दर्ज की गई थी जबकि मुस्लिम महिलाओं के लिए यह आंकड़ा था 4.41. इसके बाद 1998-99 में हिंदुओं के लिए यह दर 2.78 और मुसलमानों के लिए 3.59 दर्ज हुई. 2005-06 में यह क्रमशः 2.59 और 3.4 हो गई. यानी हिंदू महिलाओं के साथ मुस्लिम महिलाओं की प्रजनन दर में भी बीते 15 सालों के दौरान लगातार कमी आई है.

इस आंकड़े को दूसरी तरह से भी देखा जा सकता है. 1998-99 में जहां एक हजार हिंदू महिलाओं ने 278 बच्चों को जन्म दिया था वहीं 2005-06 में यह आंकड़ा 19 कम यानी 259 हो गया. इसी अवधि में 1000 मुस्लिम महिलाओं के लिए भी यह गिरावट 19 की ही रही. 1998-99 में जहां उन्होंने औसतन 359 को बच्चों को जन्म दिया था वहीं 2005-06 में यह आंकड़ा 340 हो गया. कह सकते हैं कि मुसलमान महिलाएं हिंदू महिलाओं से औसतन लगभग एक संतान ज्यादा पैदा कर रही हैं.

आइआइपीएस ने भी अपनी रिपोर्ट में 1991 से 2001 के दौरान कई राज्यों में मुस्लिम आबादी की वृद्धि दर गिरने की बात कही है. गोवा, केरल, तमिलनाडु जैसे राज्यों में वास्तव में ऐसा हो भी रहा है. जानकारों के मुताबिक बीते कुछ दशकों के दौरान बेहतर हुई स्वास्थ्य और शैक्षिक सुविधाओं के चलते औसत उम्र बढ़ी है और छोटे परिवार के फायदों के बारे में जागरूकता भी. इसका एक नतीजा यह भी हुआ है कि दूसरे समुदायों की तरह मुस्लिम समुदाय की भी प्रजनन दर घटी है. इस वजह से उसकी आबादी में बढ़ोतरी की रफ्तार कम हुई है. भारत सरकार के आंकड़े ही बताते हैं कि 1991 से 2001 के बीच जहां मुसलमानों की आबादी 29 फीसदी बढ़ी वहीं 2001 से 2001 के दौरान यह आंकड़ा गिरकर 24 फीसदी पर आ गया.

यानी यह सिर्फ मिथ्या प्रचार है कि भारत में जल्द ही हिंदू अल्पसंख्यक हो सकते हैं. प्यू की रिपोर्ट के मुताबिक 2050 तक भी हिंदू न सिर्फ भारत में बहुसंख्यक होंगे बल्कि दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा समुदाय भी होंगे. आज उनकी संख्या करीब एक अरब है जिसमें तब तक 34 फीसदी बढ़ोतरी हो चुकी होगी. आइआइपीएस की रिपोर्ट इससे एक कदम आगे जाती है. इसके शब्दों में, 'यह कहा जा सकता है कि मुस्लिम आबादी की हिस्सेदारी आज की तुलना में बढ़ जाएगी. लेकिन इस बात की संभावना नहीं है कि यह इस सदी के आखिर तक भी 20 फीसदी से बहुत ऊपर जाएगी.'

सत्याग्रह से साभार...

DECADAL POPULATION GROWTH RATE IN PERCENTAGE

	1991	2001	2011
Hindu	25.1	20.3	16.8
Muslim	34.5	29.5	24.6
Buddhist	35.3	24.5	6.1
Christian	21.5	22.6	15.5
Sikh	24.3	18.2	8.4
Jain	4.6	26	5.4

ये एक धोखा है

डिजिटल मीडिया मार्केटिंग

पसंद होना किसे पसंद नहीं ! हर इंसान और ब्रैंड चाहता है कि उसे दुनिया भर के लोग इतना पसंद करें कि वह कामयाबी के आसमान पर पहुंच जाए। लेकिन क्या पसंद होने का कोई शॉर्टकट है/ हां, कम-से-कम डिजिटल दुनिया पर तो है और इसे डिजिटल मीडिया मार्केटिंग कहते हैं। इस दुनिया से एक रास्ता जुर्म की उन गलियों में जाता है जहां क्लिक करके पैसे कमाने का पोंजी मॉडल परवान चढ़ता है। बरास्ता डिजिटल मीडिया मार्केटिंग इस जुर्म की दुनिया से रूबरू करा रहे हैं अमित मिश्रा

क्या है डिजिटल मीडिया मार्केटिंग

मोबाइल और कंप्यूटर पर इंटरनेट के जरिए अपने ब्रैंड को बेहतर से बेहतर साबित करने की दौड़ ही असल में डिजिटल मीडिया मार्केटिंग है। जब इंटरनेट नहीं था तब ये सारी ऐक्टिविटी अलग-अलग सर्वे और विज्ञापनों के जरिए की जाती थी। इंटरनेट के आने के साथ ही साइबर दुनिया पर डिजिटल मार्केटिंग का दौर शुरू हो गया। सोशल मीडिया के आने से सबसे बड़ा बदलाव यह आया कि जहां पहले वेबसाइट पर लोगों के आने का इंतजार करना होता था वहां अब उन तक सीधे पहुंचा जा सकता था।

फेसबुक और ट्विटर पर जैसे-जैसे लोग बढ़ते गए, डिजिटल मीडिया मार्केटिंग अपना रंग-रूप और पैंतरे बदल कर लोगों तक पहुंचने की कोशिश करने लगी। फेसबुक पर लाइक और ट्विटर पर ट्रेंड करते ही ब्रैंड की साख तो बढ़ती ही है साथ ही इस साख के आंकड़े बैलेंस शीट पर भी कमाई के तौर पर नजर आने लगते हैं।

सर्च का मर्ज

इंटरनेट पर सबकुछ मिलता है, बस इसे ढूंढने के लिए गूगल पर जाना होगा। गूगल पर एक ही चीज के लिए आपको ढेरों विकल्प दिखाई पड़ेंगे। इनमें से मनचाहा विकल्प चुना जा सकता है। हर ब्रैंड चाहता है कि सर्च में उसका ब्रैंड सबसे ऊपर आए। कोई चीज कैसे सर्च में ऊपर आएगी इसके लिए गूगल ने अपने सॉफ्टवेयर में खास सेटिंग्स की हुई हैं। इनके हिसाब से वेबसाइट बनाने पर गूगल इसे खुद-ब-खुद ऊपर दिखाता है। सीधा-सा फंडा है जितना गूगल के हिसाब से चलेंगे सर्च में उतना ही ऊपर जाएगा।

फेसबुक पर लाइक्स की लूट

हमने एनसीआर की एक डिजिटल मार्केटिंग एजेंसी को खुद को बिजनसमैन बताते हुए फोन किया और अपने फेसबुक पेज पर लाइक न होने की समस्या बताई। उन्होंने हमारे बिजनस के बारे में जानकारी मांगी और अपने प्लान बताने शुरू किए। पहले तो उन्होंने महीने भर के हिसाब से प्लान बताए लेकिन मैंने एक बार में ही चंद हजार लाइक खरीदने की बात की तो उन्होंने मुझे वेबसाइट पर जाकर रेटलिस्ट देखने की बात बताई। मैंने खोद कर पूछा कि लेकिन फेसबुक तो कहता है कि लाइक खरीदे नहीं जा सकते। इस पर उधर से जवाब मिला, फेसबुक को कहने दीजिए। हम हैं ना, आपका काम करवाने वाले।

जब हम वेबसाइट पर गए तो बाकायदा जेनुइन फेसबुक लाइक खरीदने की रेटलिस्ट वहां पर मिल गई। वहां 799 रु. में 500 लाइक्स से लेकर 90 हजार रु. में 1 लाख फेसबुक लाइक्स खरीदने का ऑप्शन मौजूद था। वेबसाइट पर किसी खास लोकेशन से लाइक लेने के ऑप्शन के बारे में भी बताया गया था। आप इंडिया या अमेरिका के लाइक्स मनमुताबिक खरीद सकते हैं।

अगर आपको हर हफ्ते के हिसाब से लाइक चाहिए जिससे किसी को शक न हो कि आप लाइक खरीद रहे हैं तो उसका भी इंतजाम है। एक दूसरी एजेंसी ने हमें बताया कि वह हर हफ्ते के हिसाब से कुछ हजार लाइक्स हमारे पेज पर देगी जिससे लाइक्स को लेकर किसी तरह का शक नहीं होगा। इसके लिए महीने में 25 से 30 हजार का खर्च आएगा।

उड़ी चिड़िया

हमने ट्विटर पर अपनी ऑडिएंस बढ़ाने के लिए एक मार्केटिंग एजेंसी को फोन किया। हमें बाकायदा रेटलिस्ट और लोकेशन के हिसाब से फॉलोअर उपलब्ध करने की बात की गई। हमें इस बात की तस्दीक दी गई कि 10 हजार रु. में 25 हजार फॉलोअर आराम से मिल जाएंगे। जब हमने किसी खास हैशटैग पर ट्रेंड करवाने के बारे में पूछा तो उन्होंने पहले ट्विटर की पेड ट्रेंडिंग सर्विस के बारे में सुझाया लेकिन हमने नॉन-एडवर्टाइजिंग सेग्मेंट में ट्रेंड करने की बात की तो उन्होंने हमें एक दूसरी एजेंसी का नाम सुझाया।

वहां पर जब हमने फोन मिलाया तो इस काम को बड़े ही सुनियोजित तरीके से करने का एक सिस्टम पता चला। किसी भी टॉपिक को ट्रेंड करवाने के लिए बाकायदा देश भर में टीमें बनाई गई हैं और तय किए गए वक्त पर लोग ट्रेंड करवाने वाले हैशटैग पर ट्वीट करना शुरू कर देते हैं। अमूमन कंपनी 1 घंटे तक टॉप 3 जगहों पर ट्रेंड करवाने के लिए चार्ज करती हैं।

लोकल ट्रेंडिंग में जहां रेट की शुरूआत 25 हजार रुपये से होती है वहीं नैशनल में ये रेट 1 लाख रुपये तक जा सकता है। सीधा फंडा है। जितना खर्च करेंगे, उतना ज्यादा पाएंगे। हमने उनसे अपने ट्विटर हैंडल को वेरिफाई करवाने के लिए कहा। उन्होंने पहले तो हमें मना कर दिया लेकिन ज्यादा जोर देने पर 60 हजार रुपये की मांग की।

गूगल पर ये लाते हैं आगे

गूगल पर सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन या एसइओ के नाम पर देश भर बड़ी इंडस्ट्री काम कर रही है। सबके पास आपको सर्च में ऊपर ले जाने के अलग-अलग और गारंटीशुदा प्लान हैं। हमने इसका हाल जानने के लिए बेंगलुरु फोन मिलाया। वहां पर मौजूद एक एजेंसी ने हमसे दावा किया कि वह बताए गए वक्त में दिए गए 10 वर्ड्स पर हमें सर्च में हमेशा पहले पेज पर शुरूआती तीन जगहों पर बनाए रहेंगे।

इसके लिए हमें हर महीने 20 हजार रुपये से 45 हजार रुपये तक देने होंगे। इसके लिए उन्हें वेबसाइट का पूरा कंट्रोल देना होगा। हमने जब वेबसाइट के ब्लैक लिस्टेड हो जाने के डर के बारे में बताया तो उन्होंने कहा, हम बरसों से यह कर रहे हैं और हमारी सर्विस लेने वाली कोई भी वेबसाइट आज तक डाउन नहीं हुई।

हम हैं रिव्यू चैंपियन

बेंगलुरु की ही एक कंपनी से हमने अपने कंपनी की वेबसाइट पर पॉजिटिव रिव्यू लिखने के लिए बात की। उन्होंने हमें इसमें इनवेस्ट न करके सोशल मीडिया पर इनवेस्ट करने की सलाह दी लेकिन जब हमने उनसे ऐसा करने के लिए अड़े रहे तो वह मान गए। हमने उनसे एक टूर एंड ट्रैवल कंपनी की तरह बात की और अमेरिका और यूरोप से रिव्यू लिखवाने के लिए कहा और हर रिव्यू के लिए हमें 5 हजार रुपये का रेट बताया। हमने जब इसके काफी महंगा होने की बात कही तो ऑर्डर कंफर्म करने के वक्त छूट मिलने की बात करते हुए हमें हर तरह की बेहतरीन सर्विस का भरोसा भी दिया।

'लाइक' के नाम पर ठगी

अब तक बात हुई डिजिटल मीडिया मार्केटिंग में लकीर टेढ़ी करके कमाई करने की। लेकिन मार्केटिंग की इस टेढ़ी लकीर को तोड़-मरोड़ कर कुछ लोगों ने इसे 'डिजिटल इंडिया' कैंपेन के नाम पर लोगों को ठगने का काम शुरू कर दिया। इस लकीर में लोगों को लपेटने का चारा यह डाला गया कि बिना पैसे खर्च किए बस एक क्लिक के जरिए घर बैठे पैसे कमाएं। गूगल सर्च में ऊपर आना पूरी तरह से उसके स्मार्ट सॉफ्टवेयर की तकनीक पर निर्भर है। गूगल मापदंडो पर डिजाइन किए जाने पर ही वेबसाइट सर्च में अपनी जगह बनाती है।

कैसे होती है कमाई

- सबसे पहले कंपनी की वेबसाइट पर जाना होगा या ऐप डाउनलोड करना होगा।
- इस पर लॉगइन करने के लिए एक रेफरेंस कोड की जरूरत होगी। यह कोड या तो कंपनी की वेबसाइट पर फोन करने से मिलेगा या किसी मेंबर से लिया जा सकेगा।
- जैसे ही रेफरेंस कोड डालेंगे, आप ऐप के जरिए काम करने के लिए तैयार हैं।
- इसके बाद कुछ पेजों को लाइक करने का टास्क दिया जाएगा। कंपनी इसे दुनिया भर में मौजूद अपने कस्टमरों के पेज बताती है लेकिन असल में ये लोकल सर्वर पर ही मौजूद पेज होते हैं। इन पर लाइक करवाने के बाद पहली बार में कुछ रकम अकाउंट में डाल भी जाती है।
- इसके बाद आपको इसे विड्रॉल करने के लिए दो या कंपनी पॉलिसी के हिसाब से कुछ और मेंबर बनाने होते हैं।
- इस दौरान आपसे और बाकी मेंबर्स से आगे की कमाई के लिए इन्वेस्ट करने के लिए कहा जाता है।
- इस दौरान यह ताकीद की जाती है कि जिन लोगों को अपने जरिए भेजेंगे, उन्हें अपना रेफरेंस नंबर दें। इससे आपकी कमाई और बढ़ेगी।

ऐसे बनते हैं लोग बेवकूफ

इस पूरे मॉडल को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि इसमें फंसने वाले को किसी भी तरह का शक न हो। पहले इसे डिजिटल मीडिया मार्केटिंग से जोड़ कर लोगों की तकनीक की सीमित समझ के सहारे छला जाता है। इन कंपनियों ने डायरेक्ट सेल, चेन के जरिए बेचने और पोंजी सिस्टम का एक ऐसा कॉकटेल तैयार किया है जिससे कोई बच न सके। ठगी का शिकार हो रहे इंसान को हमेशा इस बात के लिए निश्चिंत किया जाता है कि उसके पैसा न सिर्फ सेफ है बल्कि कुछ ही वक्त में किसी बड़े बिजनस में लगाया जाने वाला है।

कंपनी के कारनामों का खुलासा हो जाने के बाद भी वह ठगी के शिकार लोगों को अपने सही होने की दुहाई देती रहती है। इसी तरह की एक कंपनी जब ठग कर चंपत हो गई तो कुछ दिनों बाद उस कंपनी के फाउंडर ने लोगों को अपना ऑडियो मेसेज वट्सऐप के जरिए लोगों को भेजा। वह खुद को साजिश का शिकार लुटे-पिटे होने की बात करता सुनाई दिया। उसने लोगों के पैर छूकर माफी मांगने की बातें कहीं और पैसा हर कीमत पर वापस करने की बात कही।

लीगल है लाइक-फॉलोअर बेचना ?

डिजिटल मीडिया मार्केट की मंडी का जायजा लेने के बाद हमने इसके लीगल पहलू को समझने के लिए साइबर मामलों में एक्सपर्ट वकील विराग गुप्ता से बात की। उनका कहना है कि लाइक और फॉलोअर खरीदना कानूनन आईटी एक्ट की धारा 66 डी और आईपीसी की धारा 415 और 420 के तहत धोखाधड़ी, कालाबाजारी और पहचान छुपाना के दायरे में आता है।

इस तरह के मामले में कर्रवाई इसलिए नहीं होती क्योंकि न तो लाइक खरीदने वाले और न बेंचने वाला किसी तरह की शिकायत दर्ज करते हैं। चूंकि लाइक और फॉलोअर बेंचने का कोई लीगल बिजनस है ही नहीं ऐसे में पूरी कमाई भी ब्लैक में होती है। जब लाइक और फॉलोअर बेचने का चार्ज लिया जाता है तो उसे भी बिल में लिखा नहीं जाता। सिर्फ सोशल मीडिया मार्केटिंग का जिक्र करके बिल बना दिया जाता है। सरकार और फेसबुक, गूगल और ट्विटर जैसी मल्टीनैशनल कंपनियों की कमजोर इच्छाशक्ति से इस पर लगाम लगाना मुश्किल हो गया है।

ये तो बातें हुईं एक खास मार्केटिंग स्टाइल और बिरादरी की लेकिन इसके पीछे एक और दुनिया है जिसके बारे में हमने जानने की कोशिश की। हमने दिल्ली-एनसीआर में कुकरमुत्ते की तरह उग चुकी डिजिटल मीडिया मार्केटिंग कंपनियों से इस मामले में टोह लेने की कोशिश की। पेश है उसकी तस्वीर।

हमने भी जब वॉट्सऐप के जरिए मिले नंबरों पर फोन किया तो पता चला कि वे असल में एक खास कंपनी की चेन का हिस्सा हैं और अपने रेफरेंस कोड के जरिए ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को ऐप पर लॉगइन करवाना चाहते हैं। जितने ज्यादा लोग किसी खास रेफरेंस आईडी से लॉगइन करेंगे, उस रेफरेंस आईडी वाले शख्स को उतनी ही ज्यादा कमिशन मिलेगा। वॉट्सऐप के जरिए मिले मेसेज में कमाई के इस 'क्लिक मुहिम' में जुड़ने के लिए प्रधानमंत्री से लेकर सरकार के 'डिजिटल इंडिया' मुहिम तक की दुहाई दी गई है।

हमने जब गहराई से खंगाला तो पिरामिड बिजनस करने वाली इस कंपनी ने बड़े ही शातिर तरीके से एक दूसरी आईटी फर्म खोल रखी है। इसके लिए उसने सर्विस टैक्स नंबर और पैन नंबर ले रखा है। इस नंबर को यह कंपनी अपने पिरामिड स्कीम वाले धंधे के लिए भी इस्तेमाल कर रही है।

गूगल पॉलिसी

न तो फेसबुक किसी तरह के लाइक बेचता है और न ही इस तरह के किसी बिजनस मॉडल का हिस्सा है। ऐसा करना पूरी तरह से गलत है।

फेसबुक पॉलिसी

अगर कोई भी ट्विटर फॉलोअर बेचने की बात करता है तो यह धोखाधड़ी का मामला है। इस तरह की सर्विस लेने और उपलब्ध करवाने वालों के अकाउंट्स को ट्विटर पॉलिसी के तहत बंद कर दिया जाता है।

तमो... इंडियन है

नमो के बारे में तो आपने सुना ही होगा अब नमो के बाद देश में तमो की चर्चा करने का समय आ गया है. तमो मतलब टाटा मोटर्स. ये टाटा मोटर्स का नया सब-ब्रांड है जिसने अपनी पहली कार जिनीवा मोटर शो में पेश की है. इस कार का नाम भी रेसिमो है. ब्रांड का कहना है कि अब जो भी कारें लॉन्च होंगी उनके नाम के आगे 'मो' लगा होगा.

कुछ कार के बारे में

4 मीटर लंबी ये कार 2 सीटर है. इसमें 1.2 लीटर टबोर्चार्ज रेवोट्रॉन एल्युमीनियम इंजन लगा हुआ है. आसान भाषा में इस इंजन की खासियत ये है कि इसमें 6 स्पीड अटळ (ऑटोमैटिक मैनुअल ट्रांसमिशन) मोड्स हैं जिनमें पैडल शिफ्ट है. ये इंजन 210 ठे की पावर 2500 RPM की दर से पैदा कर सकता है. आसान शब्दों में समझाएं तो 210 न्यूटन मीटर की पावर में ये इंजन 2500 रोटेशन प्रति मिनट की दर से देता है. जो भी गाड़ी ज्यादा पावर कम आरपीएम की दर से पैदा करती है वो एक्सिलरेशन के मामले में बेहतर होती हैं, इसका मतलब बेहतरीन पिकअप. इसी जगह अगर rpm ज्यादा होता है तो एक्सिलरेट करना होता है जैसा की स्पोर्ट्स गाड़ियों में होता है.

पावर की बात करें तो इस इंजन में 180 ब्रेक हॉर्स पावर (ुँस्र) है. इल्ढ का मतलब है कितनी तेजी से आपका इंजन पावर का इस्तेमाल कर सकता है. कुल मिलाकर ये एक तेज कार है. टाटा का दावा है कि ये कार 0-100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार सिर्फ 6 सेकंड्स में ले लेती है.

रेसिमो का डिजाइन इटली के ट्यूरिन स्टूडियो में बनाया गया था. इस ब्रांड ने फरवरी 2017 से ही रेसिमो के टीजर पेश करना शुरू कर दिया था.

भारत की पहली कनेक्टेड कार

तमो का कहना है कि ये भारत की पहली कनेक्टेड कार है. हालांकि, अभी ज्यादा डिटेल्स इसके बारे में नहीं आईं हैं मगर कंपनी का कहना है कि ये कार बेहतरीन नैविगेशन तकनीक और कम्प्यूटराइज्ड मेंटेनेंस लॉग है. इसके अलावा, माइक्रोसॉफ्ट क्लाउड के जरिए इसकी रिमोट मॉनिटरिंग भी होगी. इसके डिस्क्रिप्शन में तो कंपनी ने ये भी कहा है कि ये भारत की पहली फुली डेवलप्ड 'फिजिटल' (फिजिकल और डिजिटल) कार है. सेफ्टी के लिए कार की बॉडी ही क्रैश प्रूफ है और साथ ही ड्राइवर और पैसेंजर एयरबैग भी हैं. कुल मिलाकर इस कार ने भी हमे अच्छे सपने दिखा दिए हैं. उम्मीद है कि नमो की तरह तमो भी कोई ना कोई कारनाम जल्द करेगी.

मोदी पर मत बरसे

विधानसभा चुनाव के नतीजों ने जो कुछ भी दिखाया है उसने सुनी हुई सारी बातें भूला दी. इतिहास जो था सो था.. लेकिन, इसमें जो नया अध्याय जुड़ा है वो मोदी युग का है. उन्होंने अपने करिश्माई नेतृत्व का जो असर दिखाया है.

भाजपा से मुकाबले के लिए महागठबंधन तैयार करने की कवायद शुरू हो गई है. खबरों की मानें तो कांग्रेस एक महागठबंधन बनाने की तैयारी में लग गयी है जिससे 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को कड़ी चुनौती दी जा सके.

देश में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीजेपी का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है. शुरूआत 2014 लोकसभा इलेक्शन से हुई थी जब मोदी को पूर्ण बहुमत मिला था. एक दो राज्य को छोड़ दें तो उसके बाद होने वाले विधानसभा चुनावों में बीजेपी लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही है. उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में भारी विजय के बाद जहां बीजेपी का आत्मविश्वास चरम पर है तो विपक्षी पार्टियों और लीडरों के हौसले पस्त हैं.

सबके जहन में यही सवाल चल रहा है कि क्या मोदी को आने वाले चुनावों में हराना काफी मुश्किल है. क्या मोदी अजेय हैं? लगता तो यही है तभी तो उत्तर प्रदेश में करारी हार के बाद सभी पार्टियां अब एक स्वर में ये बोलने से भी नहीं कतरा रही हैं कि 2019 लोकसभा चुनाव में बीजेपी को कोई मुकाबला दे सकता है तो कोई अकेली पार्टी नहीं बल्कि एक महागठबंधन ही मोदी के विजयी रथ को रोक सकता है.

भाजपा से मुकाबले के लिए महागठबंधन तैयार करने की कवायद शुरू हो गई है. जो खबरें आ रही हैं उससे तो यही निकल के आ रहा है कि कांग्रेस एक महागठबंधन बनाने की तैयारी में लग गयी है जिससे 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को कड़ी चुनौती दी जा सके. उसके पार्टी के लीडर अब भली-भांति समझ गए हैं कि अगर सभी विपक्षी पार्टी अलग-अलग चुनाव लड़ती हैं तो बीजेपी का बाल भी बांका नहीं कर पाएंगी.

संग हो सकते हैं सपा, बसपा और कांग्रेस

एक मीडिया रिपोर्ट की बात करें तो उसने कांग्रेस के बड़े लीडरों का हवाला देते हुए बताया कि सपा, बसपा और कांग्रेस का महागठबंधन बीजेपी के खिलाफ बन सकता है क्योंकि कोई भी पार्टी अब ये नहीं सोचती है कि वो अकेले दम पर मोदी के नेतृत्व वाली बीजेपी को हरा सकती है.

कयास ये भी लगाए जा रहे हैं कि अगर महागठबंधन बनता है तो अन्य दल भी साथ आ सकते हैं. कांग्रेस के कई नेता मणिशंकर अय्यर, सीपी जोशी, प्रिया दत्त, नेशनल कांफ्रेंस के उमर अब्दुल्ला और जदयू के संजय सिंह भी मोदी से मुकाबला करने के लिए महागठबंधन की वकालत कर रहे हैं.

ऐसा नहीं है कि मोदी अजेय हैं. बिहार में कांग्रेस, जदयू और राजद के गठबंधन के कारण ही 2015 में बीजेपी को करारी हार का सामना करना पड़ा था. दिल्ली में भी आप ने 2015 विधानसभा चुनाव में बीजेपी को 3 ही सीट पर सिमेट के रख दिया था. 2017 गोवा चुनाव में भी उसे केवल 13 सीट ही मिली, हालांकि सरकार बनाने में बीजेपी कामयाब रही. जहां-जहां पहले बीजेपी की सरकार रही थी वहां मोदी को हार झेलना पड़ा है.

2018 में गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्णाटक और कुछ उत्तर पूर्वी राज्य में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं. हो सकता है की इन राज्यों में भी रीजनल पार्टियां गठबंधन करें ताकि बीजेपी को हरा सकें. 2019 लोकसभा चुनाव में करीब 2 साल बचे हुए हैं. ऐसा नहीं है कि देश में कुछ प्रॉब्लम नहीं है. कमी है विपक्षी पार्टियों और लीडरों में जो 'टीना' फैक्टर से ग्रसित हो गए हैं.

पांच राज्यों में से दो, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड, जहां भाजपा के पास सत्ता नहीं थी उनमे भाजपा ने सत्ता में मजबूती से वापसी की है. पूर्वोत्तर भारत का एक राज्य मणिपुर, जहां भाजपा न के बराबर थी वहां भाजपा ने सबसे ज्यादा 36.3 फीसद वोट हासिल किया है और 21 सीटें भी हासिल की है. गोवा राज्य में भाजपा सत्ता में थी लेकिन वहां इस चुनाव में किसी को बहुमत नहीं मिला है लेकिन मत फीसद के लिहाज से यहां भी 32.5 फीसद वोटों के साथ भाजपा ने अपनी मजबूत उपस्थिति कायम रखी है. वहीं पहली बार चुनाव में उतरी आम आदमी पार्टी काफी पीछे नजर आती है. अगर पंजाब की बात करें तो यहां भाजपा और अकाली गठबंधन दस साल से सत्ता में था. पिछले चुनाव की तुलना में पंजाब में अकाली-भाजपा गठबंधन अच्छा नहीं कर सका है. हालांकि इसबात के कयास पहले ही लगाए जा रहे थे कि पंजाब में अकाली सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर बहुत अधिक है. ऐसे में चुनाव से पूर्व लड़ाई कांग्रेस बनाम आम आदमी पार्टी बताई जा रही थी. लेकिन परिणाम देखने के बाद ऐसा लगता है कि मतों के बंटवारे के मामले में कांग्रेस की लड़ाई अकाली-भाजपा गठबंधन से ज्यादा थी न कि आम आदमी पार्टी से वो लड़ रही थी.

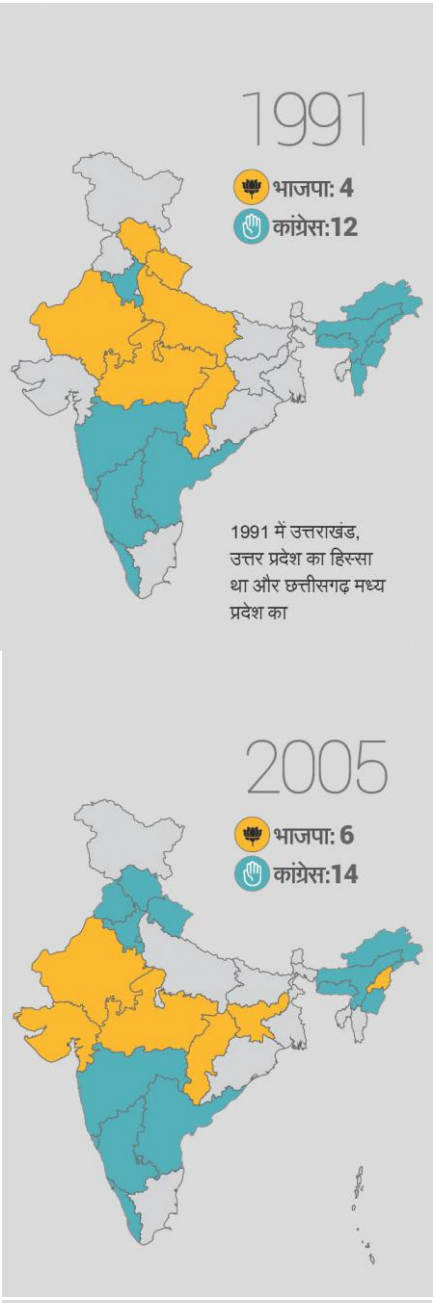

शाह ने चिराग से घर जलवा दिया

समाजवादी पार्टी के घर की फूट ने ही अखिलेश यादव के सत्ता में दोबारा लौटने के सपने को चकनाचूर कर दिया. राजनीति के रण में सेनापति के लिए बहुत जरूरी होता है अपने घर को एकजुट रखे.

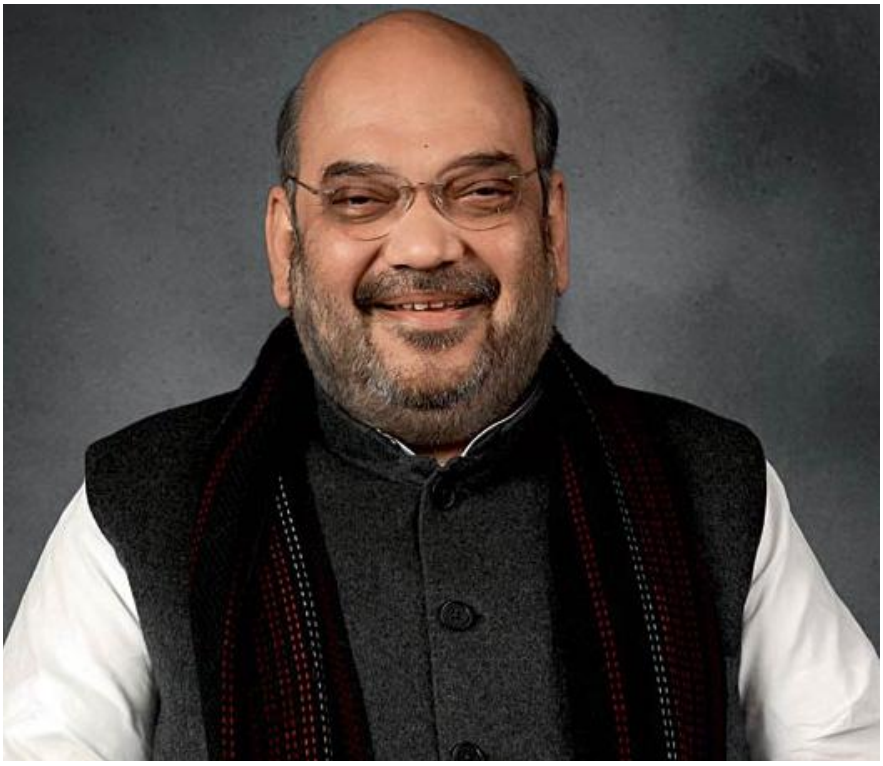

पांच राज्यों के चुनाव नतीजे आने के बाद स्थिति स्पष्ट हो गई है. उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में भगवा सुनामी ने विरोधियों को तिनके की तरह उड़ा दिया. पंजाब में कैप्टन के दम के आगे सब प्रतिद्वंदी बेदम साबित हुए. गोवा और मणिपुर में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर जरूर उभरी है लेकिन स्पष्ट बहुमत से दूर है. दोनों राज्यों में सत्ता की कुंजी अन्य और निर्दलीयों के हाथ में रह सकती है.

पहले बात करते हैं उत्तर प्रदेश की. राजनीतिक दृष्टि से देश का सबसे अहम राज्य. आबादी के हिसाब से बात की जाए तो उत्तर प्रदेश विश्व के पांचवें सबसे ज्यादा आबादी वाले देश के बराबर है. उत्तर प्रदेश के नतीजों से साफ है कि बीजेपी के मास्टर रणनीतिकार अमित शाह राज्य में ब्रैंड मोदी की मार्केटिंग वैसे ही करने में सफल रहे हैं जैसे कि 2014 लोकसभा चुनाव में की गई थी. 1985 के बाद पहला मौका है कि किसी राजनीतिक दल को उत्तर प्रदेश में 250 से अधिक सीटों का आंकड़ा पार किया है. 1985 में उत्तर प्रदेश से उत्तराखंड अलग नहीं हुआ था. तब भी कांग्रेस ने इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सहानुभूति की लहर के दम 425 सदस्यीय विधानसभा में 269 सीट जीतने में ही कामयाबी पाई थी.

उत्तर प्रदेश में इस बार ऐसा क्या हुआ कि कमल की चमक के आगे साइकिल, पंजा, हाथी सभी निस्तेज हो गए. मोदी-शाह की टीम ने जिस तरह उत्तर प्रदेश में बीजेपी के रथ से सभी प्रतिद्वंद्वियों को रौंदा वो चुनावी इतिहास में हमेशा याद किया जाएगा.

यूपी में बीजेपी के चमत्कारिक प्रदर्शन से पहले बात कर ली जाए राज्य के दो बड़े राजनीतिक क्षत्रपों की नाकामी की. यानि समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की जिनके इर्दगिर्द पिछले डेढ़ दशक से सत्ता की धुरी घूमती रही है.

शाह से बड़ा कोई रणनीतिकार नहीं

ये सही है कि ब्रैंड मोदी यूपी चुनाव में सभी प्रतिद्वंद्वियों पर भारी पड़ा लेकिन इसका सारा श्रेय बीजेपी के मास्टर चुनावी रणनीतिकार अमित शाह को जाता है. बीजेपी ने सीएम के लिए अपना उम्मीदवार प्रोजेक्ट किए बिना ये चुनाव लड़ा और पार्टी में सभी वर्गों के नेताओं को एकजुट रखा. प्रदेश में पार्टी के सभी दिग्गज नेताओं को उम्मीद बनी रही कि चुनाव के बाद मुख्यमंत्री के लिए उनके नाम पर भी विचार हो सकता है.

अमित शाह ने जब टिकटों का बंटवारा किया था तो उन्हें जरूर कुछ आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था लेकिन जिस तरह उन्होंने जातिगत समीकरणों को साधा उससे साबित हो गया है कि उनसे बड़ा चुनावी रणनीतिकार इस वक्त देश में और कोई नहीं है. पिछले कुछ विधानसभा चुनावों को देखें तो बीजेपी की नीति रही है कि किसी राज्य में जो जाति भी सबसे प्रभावी है, उसके सामने बाकी सभी जातियों को जोड़ा जाए. बीजेपी ने ये कार्ड हरियाणा में गैर जाटों, गुजरात में गैर पटेलों और महाराष्ट्र में गैर मराठाओं को साथ जोड़कर चला. अब यही दांव उसने यूपी में गैर यादव ओबीसी और गैर जाटवों को लुभा कर अपने खेमे में लाने से चला. नतीजों से साबित है कि ये दांव बीजेपी को यूपी में खूब फला भी. नोटबंदी से बड़ा मुद्दा यूपी में कानून और व्यवस्था की बदहाली का साबित हुआ.

आग लग गई घर के ही चिराग से

समाजवादी पार्टी के घर की फूट ने ही अखिलेश

यादव के सत्ता में दोबारा लौटने के सपने को चकनाचूर कर दिया. राजनीति के रण में सेनापति के लिए बहुत जरूरी होता है अपने घर को एकजुट रखे. इसी मोर्चे पर अखिलेश पूरी तरह नाकाम साबित हुए. पिता मुलायम हो या चाचा शिवपाल यादव समाजवादी पार्टी के साथ रहते हुए भी अखिलेश के लिए अपनी नाराजगी का इजहार करते रहे. रही सही कसर मुलायम सिंह की दूसरी पत्नी साधना गुप्ता ने आखिरी चरण के चुनाव से पहले अखिलेश के खिलाफ मुंह खोल कर पूरी कर दी. अखिलेश के लिए पैर पर दूसरा कुल्हाड़ी मारने वाला कदम कांग्रेस के साथ गठजोड़ करना रहा. कांग्रेस से हाथ मिलाने से समाजवादी पार्टी को कोई फायदा नहीं हुआ. पारंपरिक यादव वोटों के अलावा मुस्लिम वोट समाजवादी पार्टी को उतने ही मिले जितने कांग्रेस से गठबंधन किए बगैर भी मिलते हैं. अखिलेश ने कांग्रेस के लिए 114 सीटें छोड़ी थीं, लेकिन कांग्रेस सीटें जीतने के मामले में दहाई का आंकड़ा भी नहीं छू सकी.

यूपी में एसपी-कांग्रेस गठबंधन ने युवा वोटरों को लुभाने के लिए पूरा जोर लगाया. 'यूपी के लड़के' हो 'यूपी को ये साथ पसंद है' जैसा कोई भी नारा कारगर साबित नहीं हुआ. युवा वोटरों ने भी गठबंधन की जगह कमल पर बटन दबाना ज्यादा पसंद नहीं हुआ. अखिलेश विकास को लेकर अपनी सकारात्मक छवि को भी वोटों में तब्दील करने में सफल नहीं हो सके.

अखिलेश के लिए 'गुजरात के गधों' वाला बयान' देना भी भारी पड़ा. इस बयान पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह गधे को मेहनती बताकर पलटवार किया, उसका मतदाताओं में सकारात्मक संदेश गया. सातवें और आखिरी चरण के चुनाव से एक दिन पहले लखनऊ में संदिग्ध आतंकी सैफुल्ला के एनकाउंटर ने आतंकवाद के मुद्दे को फिर फ्रंट पर ला दिया. इस घटना का बनारस और आसपास के क्षेत्रों में ऐन मतदान के दिन असर पड़ा.

वजूद बचाए रखने का सवाल

मायावती उत्तर प्रदेश के चुनाव नतीजे आने के बाद धांधली की शिकायत कर रही हैं. कायदे से उन्हें मंथन करना चाहिए कि आखिर पहले क्यों बीएसपी का लोकसभा चुनाव में सफाया हुआ और अब विधानसभा चुनाव में भी पार्टी की बुरी गत हुई. 2007 में मायावती ने सवर्णों को साथ जोड़कर सोशल इंजीनियरिंग के दम पर सत्ता हासिल की थी. लेकिन अब तमाम कोशिशों के बाद भी मायावती अपने पारंपरिक जाटव वोट बैंक के अलावा अन्य

वर्गों को साथ लाने में नाकाम रहीं. इस चुनाव में 100 मुस्लिम उम्मीदवार उतारने का दांव भी मायावती के लिए काम नहीं आया. बीएसपी के लिए रही सही कसर पूर्वी उत्तर प्रदेश में आपराधिक छवि के मुख्तार अंसारी एंड कंपनी से हाथ मिलाकर पूरी हो गई.

पंजाब में की कैप्टन पारी

75 साल की उम्र में भी कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पंजाब में कांग्रेस को शानदार जीत दिलाकर साबित कर दिया कि उनमें अब भी कितना दमखम है. ये जीत कांग्रेस से ज्यादा खुद कैप्टन की जीत है. पंजाब में चिट्टे (नशे) और भ्रष्टाचार के मुद्दों ने चुनाव से पहले ही ये साफ कर दिया था कि मतदाताओं ने बादल एंड कंपनी को इस बार सत्ता से बेदखल करने का मन बना रखा था.

लेकिन वहां ये बड़ा सवाल था कि मतदाता किस पर अधिक भरोसा जताएंगे-केजरीवाल की झाड़ू पर या पहले भी देखे-परखे कैप्टन अमरिंदर के हाथ पर.

पंजाब के मतदाताओं ने कैप्टन के अनुभव पर अधिक भरोसा किया. बीजेपी पंजाब में अकाली दल की जूनियर पार्टनर थी, इसलिए बादल परिवार के खिलाफ लोगों की नाराजगी का खामियाजा उसे भी भुगतना पड़ा. केजरीवाल कई महीनों से पंजाब में मेहनत कर आम आदमी पार्टी के लिए माहौल बनाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन पार्टी में चुनाव से पहले ही फूट और मुख्यमंत्री के लिए किसी सशक्त सिख उम्मीदवार को ना पेश कर पाना आम आदमी पार्टी की सबसे बड़ी कमजोरी साबित हुआ. केजरीवाल के लिए ये संतोष की बात हो सकती है कि वो पंजाब विधानसभा का चुनाव उन्होंने पहली बार लड़ा और वो राज्य में अकाली-बीजेपी गठबंधन को पीछे धकेल कर दूसरे नंबर की पार्टी बन गई.

गोवा-मणिपुर में खंडित जनादेश

उत्तर प्रदेश और पंजाब के अलावा दूसरे राज्यों की बात की जाए तो उत्तराखंड में भी भगवा सुनामी चली है. उत्तराखंड के अस्तित्व में आने के बाद जो उसका छोटा सा चुनावी इतिहास है उसमें राज्य के मतदाताओं ने किसी भी पार्टी को लगातार दूसरी बार सत्ता नहीं सौंपी है. इस बार के नतीजे भी अलग नहीं है. हरीश रावत के नेतृत्व में कांग्रेस को उत्तराखंड में करारी हार मिली है. पार्टी के कई कद्दावर नेताओं ने चुनाव से पहले बगावत कर बीजेपी का दामन थामा था. बीजेपी ने ऐसे नेताओं को टिकट भी खूब दिया. इसको लेकर बीजेपी के कुछ नेताओं ने असंतोष भी जताया था. लेकिन नतीजे आने के बाद बीजेपी का टिकटों का बंटवारा सही साबित हुआ.

जहां तक गोवा की बात की जाए तो बीजेपी को मौजूदा मुख्यमंत्री लक्ष्मीकांत पर्सेकर की हार से झटका लगा है. यहां कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभरी है लेकिन सरकार बनाने के लिए अन्य दलों से समर्थन लेना पड़ेगा इसलिए यहां विधायकों की खरीद-फरोख्त की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता. गोवा जैसी ही स्थिति मणिपुर में है. यहां 2002 से ही कांग्रेस के इबोबी सिंह एकछत्र राज्य करते आ रहे हैं. लेकिन इस बार बीजेपी ने राज्य में पहली बार दमदार उपस्थिति दिखाते हुए इबोबी सिंह तगड़ी टक्कर दी है. मणिपुर में भी सत्ता की कुंजी अन्य और निर्दलीय विधायकों के हाथ में दिखाई दे रही है. यानि मणिपुर में भी आने वाले दिनों में हॉर्स ट्रेडिंग पूरे शबाब में दिखाई दे सकती है. मणिपुर में इरोम शर्मिला ने पहली बार चुनावी राजनीति में कदम रखा लेकिन खुद चुनाव हार गईं. उन्होंने नतीजे आने के बाद राजनीति छोड़ने का ही संकेत दिया है.

जख्मों के निशान अब भी ताजा हैं

भारत के इतिहास में कुछ तारीख कभी नहीं भूली जा सकती हैं। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के पर्व कर पंजाब में अमृतसर के जलियांवाला बाग में ब्रिटिश ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर द्वारा किए गए निहत्थे मासूमों के हत्याकांड से केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक राज की बर्बरता का ही परिचय नहीं मिलता, बल्कि इसने भारत के इतिहास की धारा को ही बदल दिया।

आजादी के आंदोलन की सफलता और बढ़ता जन आक्रोश देख ब्रिटिश राज ने दमन का रास्ता अपनाया। वैसे भी 6 अप्रैल की हड़ताल की सफलता से पंजाब का प्रशासन बौखला गया। पंजाब के दो बड़े नेताओं, सत्यापाल और डॉ. किचलू को गिरफ्तार कर निर्वासित कर दिया गया, जिससे अमृतसर में लोगों का गुस्सा फूट पड़ा था।

जैसे ही पंजाब प्रशासन को यह खबर मिली कि 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन आंदोलनकारी जलियांवाला बाग में जमा हो रहे हैं, तो प्रशासन ने उन्हें सबक सिखाने की ठान ली। एक दिन पहले ही मार्शल लॉ की घोषणा हो चुकी थी।

पंजाब के प्रशासक ने अतिरिक्त सैनिक टुकड़ी बुलवा ली थी। ब्रिगेडियर जनरल डायर के कमान में यह टुकड़ी 11 अप्रैल की रात को अमृतसर पहुंची और अगले दिन शहर में फ्लैग मार्च भी निकाला गया।

आन्दोलनकारियों के पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बैसाखी के दिन 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा रखी गई, जिसमें कुछ नेता भाषण देने वाले थे। हालांकि शहर में कर्फ्यू लगा हुआ था, फिर भी इसमें सैंकड़ों लोग ऐसे भी थे, जो आस-पास के इलाकों से बैसाखी के मौके पर परिवार के साथ मेला देखने और शहर घूमने आए थे और सभा की खबर सुन कर वहां जा पहुंचे थे।

सभा के शुरू होने तक वहां 10-15 हजार लोग जमा हो गए थे। तभी इस बाग के एकमात्र रास्ते से डायर ने अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ वहां पोजिशन ली और बिना किसी चेतावनी गोलीबारी शुरू कर दी।

जलियांवाला बाग में जमा लोगों की भीड़ पर कुल 1,650 राउंड गोलियां चलीं जिसमें सैंकड़ो अहिंसक सत्याग्रही शहीद हो गए, और हजारों घायल हुए। घबराहट में कई लोग बाग में बने कुंए में कूद पड़े।

कुछ ही देर में जलियांवाला बाग में बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैकड़ों लोगों की लाशों का ढेर लग गया था। अनाधिकृत आंकड़े के अनुसार यहा 1000 से भी ज्यादा लोग मारे गए थे। इस बर्बरता ने भारत में ब्रिटिश राज की नींव हिला दी।

मुख्यालय वापस पहुंच कर डायर ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित किया कि उस पर भारतीयों की

एक फौज ने हमला किया था जिससे बचने के लिए उसको गोलियां चलानी पड़ी। ब्रिटिश लेफ्टिनेंट गवर्नर मायकल ओ डायर ने उसके निर्णय को अनुमोदित कर दिया। इसके बाद गवर्नर मायकल ओ डायर ने अमृतसर और अन्य क्षेत्रों में मार्शल लॉ लगा दिया।

इस हत्याकाण्ड की विश्वव्यापी निंदा हुई जिसके दबाव में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट एडविन मॉटेग्यु ने 1919 के अंत में इसकी जांच के लिए हंटर कमीशन नियुक्त किया। कमीशन के सामने ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर ने स्वीकार किया कि वह गोली चलाने का निर्णय पहले से ही ले चुका था और वह उन लोगों पर चलाने के लिए दो तोपें भी ले गया था जो कि उस संकरे रास्ते से नहीं जा पाई थीं।

हंटर कमीशन की रिपोर्ट आने पर 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को पदावनत कर कर्नल बना दिया गया और उसे भारत में पोस्ट न देने का निर्णय लिया गया। भारत में डायर के खिलाफ बढ़ते गुस्से के चलते उसे स्वास्थ्य कारणों के आधार पर ब्रिटेन वापस भेज दिया गया।

ब्रिटेन में हाउस ऑफ कॉमन्स ने डायर का निंदा प्रस्ताव पारित किया परंतु हाउस ऑफ लॉर्ड ने इस हत्याकांड की प्रशंसा करते हुए उसका प्रशस्ति प्रस्ताव पारित किया। विश्वव्यापी निंदा के दबाव में बाद को ब्रिटिश सरकार को उसका निंदा प्रस्ताव पारित करना पड़ा और 1920 में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर को इस्तीफा देना पड़ा।

बॉलीवुड में कहां तक जाएगी ये सरोगेसी

सरोगेसी का बॉलीवुड से बहुत पुराना तो नहीं, पर काफी चर्चित सम्बन्ध रहा है. मिस्टर परफेक्शनिस्ट से लेकर किंग खान ने भी बच्चे के जन्म के लिए सरोगेट मदर का सहारा लिया है...

जगत सिंह

जब से करण जौहर ने अपनी ऑटोबायोग्राफी 'एन अनसूटेबल बॉय' के लॉन्च पर पिता बनने की इच्छा जताई थी. तब उन्होंने बच्चा अडॉप्ट करने या सरोगेसी से बच्चे पैदा करने की बात कही थी, तभी से इस खबर के भविष्य में सच साबित होने के कयास लगाने शुरू हो गए थे. करण जौहर सरोगेसी के जरिए 7 फरवरी को ही पिता बन गए थे पर उन्होंने ये खबर सभी से छिपाकर रखी, जुड़वां बच्चों में एक बेटा यश है और दूसरी बेटी का नाम रूही रखा है.

ये जानकारी करण ने ट्वीट के जरिये बताई, खास बात ये की उन्होंने अपने बच्चों के नाम अपने माता-पिता, हीरू और यश जौहर के नाम पर रखे हैं, करण जौहर अब पिता तो बन गए हैं पर सरोगेसी से पिता बनने के बाद भी मां का नाम नहीं दे सकते. चाइल्ड बर्थ रजिस्ट्रेशन डिटेल्स में करण जौहर का नाम बच्चों के पिता के तौर पर दर्ज किया गया है और मां के नाम का कॉलम खाली है, क्योंकि करण अभी तक शादीशुदा नहीं हैं और दूसरे की अपने बच्चों की मां का नाम सामने आने से उस औरत की सामाजिक छवि पर असर पड़ता. मुंबई के अंधेरी स्थित मसरानी हॉस्पिटल में बच्चों का जन्म हुआ है.

सरोगेसी का बॉलीवुड से बहुत पुराना तो नहीं, पर काफी चर्चित सम्बन्ध रहा है, 2011 में मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान सरोगेसी के द्वारा पिता बनें. मुंबई के एक प्राइवेट अस्पताल में बेटे का जन्म एक दिसंबर को आईवीएफ तकनीक के जरिये 'सरोगेट मदर' की कोख से हुआ. आमिर का इस विषय में कहना था,'बेटे के जन्म से हम बेहद खुश हैं. यह मुझे काफी प्रिय है क्योंकि काफी मुश्किलों के बाद इसे हमने पाया है. स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों के कारण डॉक्टरों ने हमें आईवीएफ-सरोगेसी की सलाह दी थी. हम अपने शुभचिंतकों का शुक्रिया अदा करते हैं.'

गौरतलब है की शाहरुख खान का तीसरा बच्चा, अबराम की पैदाइश भी इसी अस्पताल में जून 2013 में हुई थी. अबराम का जन्म भी सरोगेसी के जरिये हुआ था.

जून 2016 में जब तुषार कपूर ने अविवाहित होते हुए सरोगेसी से अपने बेटे लक्ष्य के होने की घोषणा की थी, उसके तुरंत बाद पिछले ही साल से केन्द्र सरकार ने इनफर्टिलिटी ट्रीटमेंट के तहत सरोगेसी को लेकर गाइडलाइंस जारी की थीं. इसमें एक पॉइंट ये भी था कि कोई भी शख्स बिना शादी किए सरोगेसी के जरिए पिता नहीं बन सकता.

सरोगेसी विवादस्पद विषय होने के करण फिल्मकारों के लिए भी फिल्म बनाने का मसाला बना, हालांकि सिर्फ सलमान की फिल्म ही बहु-चर्चित फिल्म बनी, जिसका नाम था 'चोरी चोरी चुपके चुपके', जो 2001 में ही बनी थी. और फिर दूसरी 2012 में बनी फिल्म 'विककी डोनर' भी काफी सुर्खियां बटोंरी. कुछ और फिल्मो की कहानियों में भी सोरोगोसी के विषय को उठाया गया है जैसे 1983 में बनी फिल्म 'दूसरी दुल्हन' , 2002 में बनी ' फिलहाल ₹ और 2010 में बनी 'आई एम आफिया'.

भारतीय सिनेमा के सुपर स्टार सलमान खान के अभी तक शादी नहीं करने पर हमेशा लोगों की दिलचस्पी रही है, पर उम्र के 50 वर्ष पर गए सलमान भी क्या सोरोगोसी के द्वारा ही पिता बनेंगे दूसरे खान और अपने प्रिय मित्र करण जौहर की तरह... इस सवाल का जवाब भविष्य के गर्भ में है.

सरोगेसी एक विवादास्पद मुद्दा है भारत में, सरोगेसी का शाब्दिक अर्थ- सरोगेसी शब्द लैटिन शब्द 'सबरोगेट' से आया है जिसका अर्थ होता है किसी और को अपने काम के लिए नियुक्त करना. फिर भी सरोगेसी निसंतान दंपत्ति को बल्कि समलैंगिक लोगों को भी मां या पिता बनने का सुखद अहसास कराने में मदद करती है.

स्त्री क्या चाहती है..!

प्रीति 'अज्ञात'

'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' की शुभकामनाएं, बोलना उतना ही आसान है जैसा कि 'स्वतंत्रता दिवस मुबारक हो' कहना या अन्य कोई भी दिवस की बधाई देते समय औपचारिकताएं निभाना. सब जानते हैं, इस सब की सच्चाई, एक तिथि या अवकाश से ज्यादा कुछ भी नहीं. कभी गौर कीजियेगा, नब्बे प्रतिशत महिलाओं के मुंह से इस बधाई की प्रतिक्रियास्वरुप खिसियाता 'थैंक्स' ऐसे निकलेगा जैसे अस्पताल के बिस्तर पर पड़े किसी बीमार बच्चे को हैप्पी बर्थडे बोल दिया गया हो. पर एक बात यह भी है कि कोई 'विश' करे, अच्छा तो लगता ही है!

सच समझे आप, 'स्त्रियों' को समझ पाना इतना आसान नहीं है. स्त्री मन की थाह का अंदाजा, शायद स्त्री को स्वयं भी नहीं होता. फिर भी इन बातों को समझकर शुभकामनाएं भेजेंगे, तो उसे अच्छा लगेगा-

आज जिस इंसान पर कोई स्त्री आग-बबूला हो रही है, कल उसी के लिए नम आंखों से दुआ मांगती दिखेगी. क्योंकि उसे परवाह है अपनों की, क्रोध उस खिसियाहट का परिणाम है कि अपनों को उसकी परवाह क्यों नहीं? ये प्रेम है उसका.

जाओ, अब तुमसे कभी बात नहीं करुंगीर कहकर दस सेकंड बाद ही सन्देश भेजेगी, सॉरी यार, कॉल करूं क्या? क्योंकि वो आपके बिना रह ही नहीं सकती, उसे कद्र है आपकी उपस्थिति की. ये रिश्तों को निभाने की जिद है उसकी.

- रात भर सिरहाने बैठ बीमार बच्चे का माथा सहलाती है, कभी अपनी नींदों का हिसाब नहीं लगाती. ममता है उसकी.
- हिसाब से घर चलाते हुए, भविष्य के लिए पैसे बचाती है और एक दिन वो सारा धन बेहिचक किसी जरूरतमंद को दे आती है. दयालुता है उसकी.
- कोई उसकी मदद करे न करे, लेकिन वो सबकी मदद को हमेशा तैयार रहती है. संवेदनशीलता है उसकी.
- अपने आंसू भीतर ही समेटकर, दूसरों की आंखें पोंछ उन्हें दिलासा देती है. दर्द को समझने की शक्ति है उसकी.
- अपनों के लिए ढाल बनकर दुश्मन के सामने खड़ी हो जाती है. हिम्मत है उसकी.
- बार-बार जाती है, जाकर लौट आती है. इश्क है, दीवानगी है उसकी.
- एक हद तक सफाई देती है, फिर मौन हो जाती है. गरिमा है उसकी.

मम्मी, बेटी, गुड़िया, सुनो, दीदी, बुआ, चाची और ऐसे ही अनगिनत नामों-रिश्तों के बीच खोई हुई कभी फुरसत के कुछ पलों में अति औपचारिक ढंग से तैयार किये गए स्कूली प्रमाण-पत्रों में अपना नाम पढ़कर खुद को पुकार लेती है. स्वयं की तलाश में, खोयी रही अब तक....कुछ ऐसी ही जिन्दगी है उसकी. मेरे लिए स्त्री का यही पर्याय है.

'स्त्री' ईश्वर की गढ़ी वह खूबसूरत कृति है, जिसके बिना सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती. ये वो धुरी है जिसके गर्भ में जीवन पनपता है. नारी, 'नर' की महिमा है, गरिमा है, ममता की मूरत है, अन्नपूर्णा है, कोमल भाषा है, निर्मल मन और स्वच्छ हृदय है, समर्पिता है. और इन सबसे भी अहम बात वो सिर्फ.एक ज़िस्म ही नहीं, उसमें जां भी बसती है. अपने हिस्से के सम्मान की हकदार है वो.

हमें बदलना ही होगा अपने-आप को, अपनी सोच को, अपने आसपास के माहौल को, नारी को उपभोग की वस्तु समझने वालों की कुत्सित सोच को..अब बिना डरे हुए सामना करना ही होगा उन पापियों का, समाज के झूठे ठेकेदारों का, बेनकाब करना है हर घिनौने चेहरे की सच्चाई को..साथ देना होगा, उस नारी का, उम्मीद की लौ जिसकी आँखों में अब भी टिमटिमाती है, जिसे अब भी विश्वास है बदलाव पर!

स्त्री को कोई अपेक्षा नहीं सिवाय इसके कि उसे 'इंसान' समझा जाए, उसे भी उसके हिस्से का मान मिले. उसके साथ निर्ममता और क्रूरतापूर्ण व्यवहार न हो. वो देवी बनने की इच्छुक तो बिल्कुल भी नहीं. जहां तक 'फेमिनिज्म' की बात है तो फेमिनिज्म को बवाल समझने वालों के लिए यह जानना आवश्यक है कि स्त्री की लड़ाई पुरुष वर्ग के खिलाफ नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्थाओं के खिलाफ है, जिसमें समाज का हर वर्ग सम्मिलित है. विज्ञान का नियम है , किसी वस्तु को दबाने पर वो दुगुनी शक्ति से उछलती है, कुछ ऐसा ही स्त्रियों के साथ भी हुआ है.

अपने कर्त्तव्यों के पूर्ण निर्वहन के साथ, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक एवं सचेत रहकर सत्य के पक्ष में खड़े हो, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना ही 'फेमिनिज्म' है. नारी आंदोलन, नारी अधिकारवाद, स्त्री सशक्तिकरण, स्त्रीत्व जिंदाबाद के नाम पर हो रही तमाम रैलियों, भाषणों और टिमटिमाती मोमबत्तियों को मैं खारिज करती हूं.

'फेमिनिज्म' शब्द का प्रयोग हर युग में, हर तबके में, हर ओहदे पर बैठे लोगों द्वारा अलग-अलग विधियों से अलग-अलग प्रयोजनों के लिए किया जाता रहा है. पर 'स्त्रीत्व' के नाम पर खुद की महानता के गुणगान और हर बात में पुरुषों को दोषी ठहरा देना निहायत ही गलत है. पहले और अब की परम्पराओं तथा सोच में अंतर आ चुका है. हां, नारी के मूलभूत गुण अब भी सुरक्षित है. परिवर्तन गर हुआ है तो यही, कि अब उसे अपनी समस्याओं पर बोलना आ गया है, झिझक खुलती जा रही है, वों ४’३३ं२‘ल्लॅ करना भी जान गई है. लेकिन हर बात में झंडा फहराते हुए मोर्चा निकाल देना और व्यर्थ की नारेबाजी उचित नहीं लगती! अबला, असहाय, निरीह अब पुराने गीत हैं. आंसू, होते तो असल हैं पर उन्हें हथियार की तरह इस्तेमाल न किया जाए तो बेहतर!

'स्त्रीत्व' यही है कि हम अपने मूलभूत गुणों को संरक्षित रखते हुए, हर वर्ग को उसके हिस्से का मान दें और जरुरत पड़ने पर अपनी बात भी अन्य प्रजाति (पुरुष) पर दोषारोपण किये बिना कह सकें. क्योंकि हमारी और आपकी दुनिया में बहुत अच्छे और सुलझी सोच वाले पुरुषों की उपस्थिति को भी नकारा नहीं जा सकता. एक कटु सत्य यह भी है कि अत्याचार पुरुषों पर भी होते हैं, परन्तु सामाजिक ढांचा ही कुछ ऐसा है कि वे इस विषय पर बात करने में असहज महसूस करते हैं. आजकल की युवा पीढ़ी की सकारात्मक सोच, समाज के लिए बहुत उम्मीदें पैदा करती है. हमें आशान्वित रहना होगा कि कुछ वर्षों में स्त्री-पुरुष के बीच यह द्वंद्व ही समाप्त हो जाए और दोनों एक दूसरे की सत्ता को मान देते हुए, आपसी मतभेद के बावजूद मनभेद न रखें. तभी इस सच्चाई को स्नेह से स्वीकार कर सामंजस्य बैठा पाने में सक्षम होंगे! तब तक ऐसी चर्चाओं का जीवंत रहना जरुरी है. उसके बाद पुरुष दिवस हो या स्त्री दिवस क्या फर्क पड़ता है. बस, मानवता बची रहे!

ग्लैमर वाली

एविएशन इंडस्ट्री

एविएशन इंडस्ट्री को दुनिया की सबसे ग्लैमरस इंडस्ट्रीज में से एक माना जाता है। इसमें एक शानदार लाइफस्टाइल के साथ-साथ अच्छा खासा पैसा कमाने का भी इंतजाम है लेकिन एविएशन का मतलब सिर्फ हवाई जहाज में पायलट होना ही नहीं होता। इसके अलावा भी इस इंडस्ट्री में बहुत से ऐसे काम हैं जिसके बारे में ज्यादा लोगों को पता भी नहीं है। इसमें एयरपोर्ट पर मेनेजमेंट से लेकर एयर ट्रैफिक कंट्रोल तक का काम आता है।

पुणे के सावित्रीबाई फूले यूनिवर्सिटी इसी क्रम में एविएशन इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स से विचार-विमर्श करने के बाद अपने यहां एक नए कोर्स की शुरूआत करने की तैयारी में है। कोर्स का नाम 'एम टेक इन एविएशन मेनेजमेंट' रखा गया है। पहले इस कोर्स का नाम एम टेक इन एविएशन था। यूनिवर्सिटी के अकादमिक काउंसिल के पास कोर्स के फॉर्मेट को बदलने का प्रपोजल दे दिया गया है। साथ ही साथ यूनिवर्सिटी ने काउंसिल के सामने तीन साल का एक अंडर ग्रेजुएट कोर्स भी शुरू करने का फैसला किया है।

यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर वासुदेव गड़े ने बताया कि छात्रों को पायलट बनाने के बजाय, कोर्स इन्हें एयर ट्रैफिक और ग्राउंड क्लीयरेंस मेनेजर बनाने की ओर ध्यान देगा। साथ ही कोर्स के नाम को लेकर उन्होंने बताया कि इसका फैसला इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स से बात करने के बाद किया गया है। इसका सजेशन एयर इंडिया की ओर से आया था।

उनका कहना था कि ये वो विषय है जिसमें करियर के ज्यादा ऑप्शन हैं। इन क्षेत्रों में ट्रेंड स्किल्ड लोगों की जरूरत है। इसलिए हमने कोर्स को एम टेक इन एविएशन से एविएशन मेनेजमेंट किया है।

इस कोर्स की खास बातें

यूनिवर्सिटी कोर्स को जर्मनी और मायामी के दो फ्लाइट स्कूल के साथ मिलकर कंडक्ट करेगी। जिसमें छात्रों को कोर्स में जर्मनी या मायामी में से किसी एक को चुनने की आजादी होगी। पास आउट होने वाले छात्रों को डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन के भी टेस्ट को पास करना होगा।

तीन साल के डिग्री कोर्स के बारे में वीसी ने बताया कि कोर्स में 20 सीट होंगे जिसके लिए एक आल इंडिया लेवल का टेस्ट लिया जाएगा। तीन साल के कोर्स के लिए फी तकरीबन 26-30 लाख के आस-पास होगी। यूनिवर्सिटी के एम टेक इन एविएशन कोर्स की फी लगभग 65 लाख है।

बुलाए जाएंगे एक्सपर्ट फैकल्टी

दोनों हो कोर्स में इंडस्ट्री से एक्सपर्ट लोगों को फैकल्टी के तौर पर बुलाया जाएगा। एम टेक इन एविएशन मेनेजमेंट के लिए सिलेबस को इंडस्ट्री में एक्सपर्ट्स के साथ मिल कर फिर से डिजाइन कर लिया गया है। जिसे अकादमिक काउंसिल के पास भेज दिया गया है। एक बार काउंसिल से पास होने के बाद बी टेक के लिए भी इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स के साथ मिल कर सिलेबस प्लान करने की तैयारी है।

आज की तारीख में बहुत कम ही यूनिवर्सिटीज ऐसी हैं जो एविएशन में ग्रेजुएट लेवल का कोई कोर्स ऑफर कर रही हो। बीटेक इन एविएशन के लिए हायर सेकेंडरी लेवल के स्टूडेंट्स अप्लाई करने के लिए एलिजिबल होंगे।

अल-नगाह 2017 सैन्य अभ्यास किस देशों के मध्य आरंभ किया गया है?

अल-नगाह 2017 सैन्य अभ्यास भारत और ओमान के मध्य शुभारंभ किया गया है अल-नगाह 2017 सैन्य अभ्यास से दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को और मजबूत बनाया जा सकेगो इसमें दोनों देशों की सेनाएं आतंकवाद का मुकाबला करने के तरीकों पर कार्य करेंगी इसका सैन्य अभ्यास का आयोजन हिमाचल प्रदेश के बकलोह स्थित धौलाहर पहाड़ियों में किया जा रहा है

हाल ही में आईफा में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के पुरस्कार से किस अभिनेत्री को सम्मानित किया गया है?

आईफा में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के पुरस्कार से ऐश्वर्या राय बच्चन को सम्मानित किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार ओमंग कुमार द्वारा निदेर्शित फिल्म सरबजीत में उनके बेहतरीन प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

हाल ही में किस राज्य को 2016 के नारी शक्ति पुरस्कार दिया गया है?

राजस्थान को 2016 के नारी शक्ति पुरस्कार दिया गया है राजस्थान को यह पुरस्कार बाल लिंगानुपात में बढ़ोतरी के लिए दिया गया है राजस्थान में 2011 में लिंगानुपात 888, 2015 में बढ़कर 929 तथा 2016 में यह 942 हो गया है

भारत का सबसे लंबा केबल पुल कहाँ पर बनाया गया है?

भारत का सबसे लंबा केबल पुल भरूच जिले में नर्मदा नदी पर बनाया गया है यह भारत का सबसे लंबा एक्स्ट्रा डाज्ड केबल ब्रिज है इसकी लंबाई 1344 मीटर तथा चौड़ाई 20.8 मीटर है

हाल ही में आर्टिस्ट ऑफ द ईयर पुरस्कार से किसे सम्मानित किया गया है?

विओला डेविस को आर्टिस्ट ऑफ द इयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है डेविस को यह पुरस्कार विल्सन के नाटक पर बनी फिल्म में रोज मैक्सन के किरदार के लिए दिया गया है इन्हें दूसरी बार टोनी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है

हाल ही में कहाँ की इमारत पर पर्यावरणविद जेक मंडे की म्यूरल बनाई गई है?

सिडनी के रॉक्स डिस्ट्रिक्ट की एक इमारत पर पर्यावरणविद जेक मंडे की म्यूरल बनाई गई है। इसे आर्टिस्ट एलेग्जेंडर फार्तो ने बनाया है। जेक 70 के दशक में सिडनी के नेचुरल एनवायरनमेंट को बचाने के लिए शुरू किए गए न्यूसाउथवेल्स बिल्डर्स लेबरर्स फेडरेशन (बीएलएफ) द्वारा लगे ग्रीन बैन को लेकर चर्चा में आए थे। इस बैन के जरिए ही शहर के विकास के दौरान इसकी इमारतों के अनुचित विकास को रोका गया था।

अरविन्द पद्मनाभन कौन थे?

अरविन्द पद्मनाभन वरिष्ठ पत्रकार थे इन्हें पत्रकारिता क्षेत्र में वृहद स्तर पर इनकी रिपोर्टिंग, लेखन और संपादन के लिए जाना जाता है ये आईएनएस से पूर्व पीटीआई, द टाइम्स ऑफ इंडिया तथा टीवी 18 से भी जुड़े रहे हाल ही में इनका निधन हो गया है

तटीय विनियमन क्षेत्र वेब पोर्टल क्या है?

तटीय विनियमन क्षेत्र वेब पोर्टल एक वेब आधारित प्रणाली है इस प्रणाली से परियोजना प्रस्तावकों तथा राज्य तटीय क्षेत्र प्रबंधन प्राधिकरण (एससीजेएमए) और नगरपालिका या नगर निगम नियोजन एजेंसियों जैसे संबंधित राज्य या केंद्र शासित प्रदेशों के निकायों को अपने प्रतावों की स्थिति जानने में सहायता मिलेगी इस वेब पोर्टल का मुख्य उद्देश्यों में दक्षता बढ़ाना तथा सीआरजेड मंजूरी की प्रक्रिया में पारदर्शिता लाना, तथा सीआरजेड मंजूरी प्रस्तावों की स्थिति के बारे में सही समय पर सही जानकारी उपलब्ध करवाना है.

हाल ही में दुबई टेनिस चैंपियनशिप का खिताब किसने जीता है?

दुबई टेनिस चैंपियनशिप का खिताब जीन जुलियन रोजर और रोमानिया के होरिया टेकाऊ ने जीता है दुबई टेनिस चैंपियनशिप के फाइनल मुकाबले में रोजर और टेकाऊ ने भारत के रोहन बोपन्ना और पोलैंड के मार्सिन माटकोवस्की को 4-6, 6-३, [10-3] से हराकर यह खिताब अपने नाम किया है

परिचय

अजय बजरंगी : उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जिले के गांव सादुल्लापुर में निवासरत हैं। उनके पिता कृषक है। वे लिखते हैं कि वे कवि नही हूं जो लिखता हूं, अपने शौक के लिए लिखते हैं। किसी की भावनाओं को आहत करना मेरा उद्देश्य नहीं हैं। फिर भी अगर किसी को मेरे लिखे से कष्ट पहुंचता है तो मैं क्षमा प्रार्थी हूं...

किसी से क्या कहूं

ऐ अजय
किसी से क्या कहूँ
अच्छा है खामोश रहूँ
अगर तुझे बुरा कहूंगा
तो तेरे दिल में कैसे रहूँगा

अगर सच बोल दिया
तो कहेगा जहर घोल दिया
मेरा ऐसा कोई इरादा नही
दुबारा मिलने का कोई वादा नही
वैसे जमाना बहुत खराब है

इससे ज्यादा जुबाँ खराब है
तेरे कदमों में आसमान हैं
मेरी जिंदगी का अभी ढलान हैं
चलता हूँ कब तक बैठूंगा
शाम ढली अब अपने घर ठहरूंगा...

इसी कारण...!

कितनी बड़ी विवशता
जीवन की कितनी कह पाएं

बीत जातें हैं जो दिन वो
लौट कर नही आते

यथार्थों का अनुभव कराती
ऐसी कड़ी है जिन्दगी

लहू से सींचना पड़ता हैं हर पल
हर सबक सिखायें नही जाते

तूफान भी सहने पड़ेंगे
थपेड़े ही नहीं

जीवन ही संघर्ष है इससे
पाँव पीछे हटाए नही जाते

इसी कारण अभावों का
सदा स्वागत किया मैंने,

कि घर आए हुए मेहमान
लौटाए नहीं जाते..

किसान का बेटा हूँ जनाब...

खरपतवार खेंत मैं हो,या देश मैं पहचानता हूँ
किसान का बेटा हूँ जनाब ,मैं सब जानता हूँ

क्रांति के बीज बोता हूँ ,हल हो या कलम हो
कब पकती हैं फसल हमारी ,मैं सब जानता हूँ

अपने बेटे छुपा लिए जब दौलतमन्द घरानो ने
सरहद पर डटे रहे किसान के बेटे,में सब जनता हूँ

गाँधीवादी हैं सब चुपचाप सहन कर जातें हैं हम
पसीनें की कीमत तुम्हे क्या पता ,मैं सब जानता हूँ

सिद्धी का प्रतीक

नवरात्र शब्द से 'नव अहोरात्रों (विशेष रात्रियां) का बोध' होता है। इस समय शक्ति के नव रूपों की उपासना की जाती है क्योंकि 'रात्रि' शब्द सिद्धि का प्रतीक माना जाता है। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने रात्रि को दिन की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। यही कारण है कि दीपावली, होलिका, शिवरात्रि और नवरात्र आदि उत्सवों को रात में ही मनाने की परंपरा है। यदि, रात्रि का कोई विशेष रहस्य न होता तो ऐसे उत्सवों को रात्रि न कह कर दिन ही कहा जाता। जैसे- नवदिन या शिवदिन। लेकिन हम ऐसा नहीं कहते।

नवरात्र के वैज्ञानिक महत्व को समझने से पहले हम नवरात्र को समझ लेते हैं। मनीषियों ने वर्ष में दो बार नवरात्रों का विधान बनाया है- विक्रम संवत के पहले दिन अर्थात चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) से नौ दिन अर्थात नवमी तक। इसी प्रकार इसके ठीक छह मास पश्चात आश्विन मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी अर्थात विजयादशमी के एक दिन पूर्व तक नवरात्र मनाया जाता है। लेकिन, फिर भी सिद्धि और साधना की दृष्टि से शारदीय नवरात्रों को ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है। इन नवरात्रों में लोग

अपनी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति संचय करने के लिए अनेक प्रकार के व्रत, संयम, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग-साधना आदि करते हैं। यहां तक कि कुछ साधक इन रात्रियों में पूरी रात पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर आंतरिक त्राटक या बीज मंत्रों के जाप द्वारा विशेष सिद्धियां प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। नवरात्रों में शक्ति के 51 पीठों पर भक्तों का समुदाय बड़े उत्साह से शक्ति की उपासना के लिए एकत्रित होता है और जो उपासक इन शक्ति पीठों पर नहीं पहुंच पाते वे अपने निवास स्थल पर ही शक्ति का आह्वान करते हैं।

हालांकि आजकल अधिकांश उपासक शक्ति पूजा रात्रि में नहीं बल्कि पुरोहित को दिन में ही बुलाकर संपन्न करा देते हैं। यहां तक कि सामान्य भक्त ही नहीं अपितु, पंडित और साधु-महात्मा भी अब नवरात्रों में पूरी रात जागना नहीं चाहते और ना ही कोई आलस्य को त्यागना चाहता है। आज कल बहुत कम उपासक ही आलस्य को त्याग कर आत्मशक्ति, मानसिक शक्ति और यौगिक शक्ति की प्राप्ति के लिए रात्रि के समय का उपयोग करते देखे जाते हैं।

जबकि मनीषियों ने रात्रि के महत्व को अत्यंत

सूक्ष्मता के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में समझने और समझाने का प्रयत्न किया। अब तो यह एक सर्वमान्य वैज्ञानिक तथ्य भी है कि रात्रि में प्रकृति के बहुत सारे अवरोध खत्म हो जाते हैं। हमारे ऋषि-मुनि आज से कितने ही हजारों-लाखों वर्ष पूर्व ही प्रकृति के इन वैज्ञानिक रहस्यों को जान चुके थे। आप अगर ध्यान दें तो पाएंगे कि अगर दिन में आवाज दी जाए, तो वह दूर तक नहीं जाती है, किंतु यदि रात्रि में आवाज दी जाए तो वह बहुत दूर तक जाती है। इसके पीछे दिन के कोलाहल के अलावा एक वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि दिन में सूर्य की किरणें आवाज की तरंगों और रेडियो तरंगों को आगे बढ़ने से रोक देती हैं। रेडियो इस बात का जीता-जागता उदाहरण है। आपने खुद भी महसूस किया होगा कि कम शक्ति के रेडियो स्टेशनों को दिन में पकड़ना अर्थात सुनना मुश्किल होता है जबकि सूर्यास्त के बाद छोटे से छोटा रेडियो स्टेशन भी आसानी से सुना जा सकता है। इसका वैज्ञानिक सिद्धांत यह है कि सूर्य की किरणें दिन के समय रेडियो तरंगों को जिस प्रकार रोकती हैं ठीक उसी प्रकार मंत्र जाप की विचार तरंगों में भी दिन के समय रुकावट पड़ती है। इसीलिए ऋषि-मुनियों ने रात्रि का महत्व दिन की अपेक्षा बहुत अधिक बताया है। मंदिरों में घंटे और शंख की आवाज के कंपन से दूर-दूर तक वातावरण कीटाणुओं से रहित हो जाता है। यही रात्रि का तर्कसंगत रहस्य है। जो इस वैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखते हुए रात्रियों में संकल्प और उच्च अवधारणा के साथ अपनी शक्तिशाली विचार तरंगों को वायुमंडल में भेजते हैं, उनकी कार्यसिद्धि अर्थात मनोकामना सिद्धि, उनके शुभ संकल्प के अनुसार उचित समय और ठीक विधि के अनुसार करने पर अवश्य होती है।

वैज्ञानिक आधार

नवरात्र के पीछे का वैज्ञानिक आधार यह है कि पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा काल में एक साल की चार संधियां हैं जिनमें से मार्च व सितंबर माह में पड़ने वाली गोल संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है। ऋतु संधियों में अक्सर शारीरिक बीमारियां बढ़ती हैं। अतः उस समय स्वस्थ रहने के लिए तथा शरीर को शुद्ध रखने के लिए और तन-मन को निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया का नाम 'नवरात्र' है।

अमावस्या की रात से अष्टमी तक या पड़वा से नवमी की दोपहर तक व्रत नियम चलने से नौ रात यानी 'नवरात्र' नाम सार्थक है। चूंकि यहां रात गिनते हैं इसलिए इसे नवरात्र यानि नौ रातों का समूह कहा जाता है। रूपक के द्वारा हमारे शरीर को नौ मुख्य द्वारों वाला कहा गया है और, इसके भीतर निवास करने वाली जीवनी शक्ति का नाम ही दुर्गा देवी है।

इन मुख्य इन्द्रियों में अनुशासन, स्वच्छ्ता, तारतम्य स्थापित करने के प्रतीक रूप में, शरीर तंत्र को पूरे साल के लिए सुचारू रूप से क्रियाशील रखने के लिए नौ द्वारों की शुद्धि का पर्व नौ दिन मनाया जाता है। इनको व्यक्तिगत रूप से महत्व देने के लिए नौ दिन, नौ दुगाओं के लिए कहे जाते हैं। हालांकि शरीर को सुचारू रखने के लिए विरेचन, सफाई या शुद्धि प्रतिदिन तो हम करते ही हैं किन्तु अंग-प्रत्यंगों की पूरी तरह से भीतरी सफाई करने के लिए हर 6 माह के अंतर से सफाई अभियान चलाया जाता है जिसमें सात्विक आहार के व्रत का पालन करने से शरीर की शुद्धि, साफ-सुथरे शरीर में शुद्ध बुद्धि, उत्तम विचारों से ही उत्तम कर्म, कर्मों से सच्चरित्रता और क्रमशः मन शुद्ध होता है, क्योंकि स्वच्छ मन मंदिर में ही तो ईश्वर की शक्ति का स्थायी निवास होता है।

चने चबाने में है फायदा...

भीगे बादाम के फायदे तो सब जानते हैं, लेकिन आप जानकर हैरान होंगे कि भीगे चने, भीगे बादाम से भी ज्यादा फायदेमंद होते हैं। भीगे चने में काबोर्हाइड्रेट, प्रोटीन, नमी, फैट, फाइबर, कैल्शियम, आयरन और विटामिन्स पाए जाते हैं, जिससे यह बड़ी से बड़ी बीमारियों से लड़ने में मदद करता है। इससे खून भी साफ होता है जो कि सुंदरता बढ़ाने और दिमाग तेज करने में मदद करता है। अगर आप वजन कम करना चाहते हैं तो नाश्ते में इसे रोज खाना चाहिए। आइए जानें इसके अन्य फायदेः

नहीं पड़ेंगे बीमार

शरीर को सबसे ज्यादा पोषण भीगे काले चने से मिलता है। चनों में बहुत सारे विटामिन्स और क्लोरोफिल के साथ फास्फरस आदि मिनरल्स होते हैं, जिन्हें खाने से शरीर को कोई बीमारी नहीं लगती है। रोजाना सुबह के समय भीगे चने खाने से आपको बीमारियों से लड़ने की शक्ति मिलती है। इसके लिए काले चनों को रातभर भिगोकर रख लें और हर दिन सुबह दो मुट्ठी खाएं।

डायबिटीज करेगा दूर

अगर आप डायबिटीज से परेशान हैं तो अपने आहार में भीगे चनों को शामिल करें। 25 ग्राम काले चने रात में भिगोकर सुबह खाली पेट सेवन करने से डायबिटीज दूर हो जाती है। इसके अलावा सुबह चनों से पानी को अलग कर उसमें अदरक, जीरा और नमक को मिक्स करके खाने से कब्ज और पेट दर्द से राहत मिलती है।

खून भी करे साफ

भीगे चने खाने की आदत आपको वजन कम करने में बेहद मददगार साबित होगी। अगर नियमित रूप से भीगे चनों का सेवन कर रहे हैं, तो आपका वजन नियंत्रण में रहेगा और खून भी साफ रहेगा।

एनर्जी से भरपूर

अगर आप पूरा दिन एनर्जी से भरपूर रहना चाहते हैं तो शरीर की ताकत बढ़ाने के लिए भीगे चनों में नींबू, अदरक के टुकड़े, हल्का नमक और काली मिर्च डालकर सुबह नाश्ते में खाएं। सुबह खाली पेट काले चने खाना पुरुषों के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है। चीनी के बर्तन में रात को चने भिगोकर रख दें। सुबह उठकर चनों को अच्छे से चबा-चबाकर खाएं। इससे सेक्शुअल पावर बढ़ेगी।

ऐसे बच सकते हैं थाइरॉइड से

अगर आपको लगातार थकान, वजन बढ़ना, सिर चकराना और मांसपेशियों की कमजोरी जैसी समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है तो सावधान हो जाएं। अगर आपमें इनमें से कोई एक लक्षण है तो हो सकता है कि आप थाइरॉइड से पीड़ित हों। ऐसे में फाइबर युक्त आहार का सेवन कर इस बीमारी से बचा जा सकता है। जानें थाइरॉइड की समस्या में क्या खाना चाहिए और क्या नहीं-

1. गाजरः गाजर में ऐंटीऑक्सिडेंट्स और बीटा कैरोटीन तत्व होते हैं जो थाइरॉइड के हार्मोंस को नियंत्रित करते हैं। दिनभर में एक गाजर खाना जरूरी है।
2. चुकंदरः इसमें आयरन और फाइबर की अधिकता होती है जो थाइरॉइड में फायदेमंद है। दिन में एक चुकंदर जरूर खाएं।
3. अनानासः अनानास भी ऐंटीऑक्सिडेंट्स और एंटी इन्फ्लेमेट्री तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं।
4. सेबः ऐपल में फाइबर और पेक्टिन होता है। यह शरीर के जहरीले पदार्थों को बाहर निकालता है। इसमें थाइरॉइड को नियंत्रित करने के गुण मौजूद हैं।
5. सेलरीः इससे इम्यून सिस्टम बेहतर होता है और थाइरॉइड हार्मोन नियंत्रित रहता है।

इनसे बचें

ज्यादा शुगर वाले आहार

जिन लोगों का थाइरॉइड बढ़ा हो उन्हें गन्ना, डेक्सट्रोस, हाई फ्रूटस कॉर्न सिरप आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। इनमें मौजूद कैलरी और शुगर से ब्लड शुगर लेवल बढ़ सकता है। सॉफ्ट ड्रिंक, पैन केक, जैम/जेली, कुकीज, केक, पेस्ट्री, कैंडी, दही, इन सबका भी सेवन नहीं करना चाहिए।

ज्यादा नमक वाले आहार

नमक से थाइरॉइड ग्रंथि ज्यादा प्रभावित होती है इसलिए हाइपोथाइरॉडिज्म से ग्रसित लोगों को ज्यादा नमक का खाना नहीं खाना चाहिए। समुद्री शैवाल, कैल्प और ऐसा कोई भी सी-फूड न लें जिसमें आयोडीन ज्यादा होता है।

शुद्ध दूध

हाइपोथाइरॉडिज्म में शुद्ध दूध नहीं लेना चाहिए। मलाई या क्रीम निकला हुआ दूध लें जो पचाने में आसान और फायदेमंद होता है।

कैफीन

अगर आप पहले से ही हाइपोथाइरॉडिज्म से पीड़ित हैं तो आपको कॉफी, शुगर और अन्य उत्तेजक पदार्थों को नहीं लेना चाहिए क्योंकि इनसे थाइरॉक्सिन ज्यादा पैदा होता है।

क्रिकेटर मिलियनेयर

साल भर पहले तक जिन थंगारासु नटराजन के क्रिकेट करियर पर अनिश्चितता के बादल छाए थे उन्हें आईपीएल की एक टीम ने तीन करोड़ रु की भारी भरकम कीमत में खरीदा है. एक मजदूर के इस बेटे के आईपीएल तक पहुंचने की कहानी किसी फिल्म से कम नहीं है...

इस साल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) शुरू होने में करीब एक महीने का समय बाकी है. लेकिन, यह अभी से चर्चा में है. इसकी प्रमुख वजह हाल ही में बेंगलुरू में आयोजित हुई खिलाड़ियों की नीलामी है. यह नीलामी दो वजहों से काफी चर्चा में रही. पहली वजह, कई नामी भारतीय क्रिकेटरों को किसी भी टीम ने नहीं खरीदा. दूसरी वजह यह रही कि कई गुमनाम खिलाड़ियों की बोली करोड़ों में लगी.

इन गुमनाम खिलाड़ियों में सबसे ज्यादा चौंकाने वाला नाम थंगारासु नटराजन का भी है जिन्हें किंग्स इलेविन पंजाब ने तीन करोड़ रुपए में खरीदा है. इतनी बड़ी बोली लगना खुद नटराजन के लिए भी काफी चौंकाने वाला है. एक समाचार पत्र से बातचीत में वे कहते हैं कि उनका मकसद किसी तरह से आईपीएल में पहुंचना था और इसीलिए उन्होंने अपना बेस प्राइस सबसे कम केवल 10 लाख रुपए ही रखा था. नीलामी के दौरान केवल पंजाब ही नहीं बल्कि पुणे, कोलकाता, हैदराबाद ने भी नटराजन को खरीदने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया था लेकिन अंत में पंजाब ने बेस प्राइस से 30 गुना ज्यादा रकम में नटराजन को खरीद लिया.

नटराजन को इतनी बड़ी रकम में खरीदे जाने से भले ही कई लोग हैरान हों. लेकिन, उनके अब तक के क्रिकेट करियर को करीब से देखने पर पता चलता है कि किंग्स इलेविन पंजाब ने तीन करोड़ में उन्हें खरीद कर कोई गलती नहीं की है. सलेम शहर से 36 किमी दूर एक छोटे से गांव के रहने वाले नटराजन का आईपीएल में चुने जाने तक का सफर काफी चुनौतियों से भरा रहा है. आइये जानते हैं कि 25 वर्षीय नटराजन में आखिर ऐसा क्या है कि आईपीएल की चार टीमों ने उन्हें खरीदने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया.

टेनिस की गेंद से क्रिकेट की शुरूआत

नटराजन ने अपने छोटे से कस्बे में टेनिस की गेंद से क्रिकेट खेलने की शुरूआत की थी. हालांकि, तब उन्हें यह बिलकुल नहीं पता था कि वे इस खेल को अपना करियर भी बना सकते हैं. ऐसा सोचने का एक कारण उनकी गरीबी भी थी. उनके पिता साड़ी की एक फैक्ट्री में दिहाड़ी मजदूर हैं जबकि उनकी मां सड़क किनारे चाय और खाने का एक स्टाल चलाती हैं. साल 2011-12 तक नटराजन भी मां के काम में उनकी मदद किया करते थे. नटराजन कहते हैं कि 20 साल की उम्र तक उन्होंने एक क्रिकेट स्टेडियम भी नहीं देखा था. तब तक वे टेनिस की गेंद से ही क्रिकेट खेला करते थे.

नटराजन की अपने कस्बे चिन्नापम्पट्टी से निकल कर चेन्नई के एक क्लब तक पहुंचने की कहानी भी काफी दिलचस्प है. दरअसल, शौकिया तौर पर क्रिकेट खेलने वाले नटराजन की तेज गेंदबाजी के चर्चे उनके कस्बे में काफी हुआ करते थे. वे अपने कस्बे में ही कई टूर्नामेंटों में हिस्सा लिया करते थे जिससे उन्हें पुरस्कार के रूप में कुछ पैसा भी मिल जाता था. इसी दौरान उनके ही कस्बे के और चेन्नई में रहने वाले ए जयप्रकाश की उन पर नजर पड़ी और फिर वही उन्हें चेन्नई तक लेकर गए. एक अखबार को जयप्रकाश बताते हैं कि उनका खुद का सपना एक बड़ा क्रिकेटर बनना था लेकिन वे इसे पूरा नहीं कर सके. इसके बावजूद क्रिकेट को लेकर जयप्रकाश का लगाव कम नहीं हुआ. वे चिन्नापम्पट्टी में इसी नाम से और सलेम की जिला स्तर की क्रिकेट टीम के कप्तान हैं.

जयप्रकाश के मुताबिक नटराजन जब उनकी उनकी की टीम में खेलने आया था तब उसकी उम्र 17 साल थी. लेकिन, उस समय भी वह टेनिस की गेंद से गजब की गेंदबाजी किया करता था. उस समय ही उसकी गेंद कोण बनाती हुई जाती थी जिसे खेलना आसान नहीं था. वे कहते हैं कि चिन्नापम्पट्टी की टीम से खेलने के बाद जब नटराजन ने जिला स्तर पर उनकी टीम ह्यसलेम किंग्सह्न से खेलना शुरू किया तो उन्हें अहसास हुआ कि यह युवा एक लंबी रेस का घोड़ा साबित होने के लायक है.

इसके बाद जयप्रकाश नटराजन को चेन्नई लेकर गए. वहां उन्होंने नटराजन को अपने मित्र कर्पुर जयप्रकाश से मिलवाया. कर्पुर जयप्रकाश तमिलनाडु क्रिकेट संघ के अंतर्गत आने वाली एक चतुर्थ श्रेणी लीग में दूरसंचार कंपनी बीएसएनएल की टीम की ओर से खेला करते थे. जयप्रकाश बताते हैं कि कर्पुर भी नटराजन की गेंदबाजी को देखकर काफी प्रभावित हुए और उन्हें अपनी टीम की ओर से लीग में खेलने का मौका दिया. इस लीग में भी नटराजन का शानदार प्रदर्शन जारी रहा और उन्होंने अपने प्रदर्शन से कई बड़े क्रिकेट क्लबों का ध्यान अपनी ओर खींचा. यहीं से प्रथम श्रेणी स्तर के क्रिकेट क्लब विजय क्रिकेट क्लब की टीम में उनका चयन हुआ. जयप्रकाश के अनुसार विजय क्रिकेट क्लब में चुना जाना नटराजन के करियर में सबसे अहम मोड़ साबित हुआ. यहीं से वे राज्य स्तर पर चर्चा में भी आए साथ ही इस टीम में उन्हें राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के साथ समय बिताने का मौका मिला. इससे उनकी गेंदबाजी में निखार आया और उनका अनुभव भी बढ़ा.

रणजी ट्रॉफी में चयन

नटराजन को विजय क्लब की ओर से शानदार प्रदर्शन करने का इनाम 2015 की शुरूआत में मिला जब तमिलनाडु की रणजी टीम में उनका चयन हुआ. जनवरी 2015 में उन्होंने कोलकाता के ईडन गार्डन में अपना पहला रणजी मैच बंगाल के खिलाफ खेला. इस मैच में उन्होंने तीन विकेट लिए थे. लेकिन, इस पहले ही मैच में ही ऐसा कुछ घटित हुआ जिसने उनके आगे के करियर पर विराम लगा दिया. इस मैच में उनके गेंदबाजी एक्शन को संदिग्ध बता दिया गया और उनके खेलने पर रोक लग गई. एक क्रिकेट वेबसाइट से बातचीत में नटराजन कहते हैं कि इस मैच के बाद जब उन्होंने 177 संदिग्ध एक्शन वाले गेंदबाजों की सूची में अपना नाम देखा तो उनके पांव तले जमीन खिसक गई थी. इस घटना के बाद वे करीब डेढ़ साल तक राष्ट्रीय और राज्य स्तर का क्रिकेट नहीं खेल पाए.

हालांकि, इस बुरे वक्त से उबरने में तमिलनाडु क्रिकेट संघ अकेडमी के अध्यक्ष और हेड कोच सुनील सुब्रमण्यन ने नटराजन की काफी मदद की. लंबे समय तक रविचंद्रन अश्विन के कोच रहे सुनील सुब्रमण्यन ने नटराजन का एक्शन सुधारने के लिए काफी मेहनत की. इस बुरे दौर में भी जयप्रकाश लगातार नटराजन के साथ बने रहे और उनका हौसला बढ़ाते रहे. जयप्रकाश बताते हैं कि इस डेढ़ साल में नटराजन ने जमकर पसीना बहाया. इससे वे न सिर्फ अपने गेंदबाजी एक्शन को बदलने में कामयाब हुए बल्कि इसी दौरान उन्होंने तेज गति से सटीक यॉर्कर फेंकने की कला भी विकसित कर ली. 2016 में एक्शन को लेकर बीसीसीआई से हरी झंडी मिलने के बाद नटराजन ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट में वापसी की. उन्होंने 2016-17 रणजी ट्रॉफी में तमिलनाडु की ओर से खेलते हुए आठ मैचों में 24 विकेट लिए इस दौरान उनकी लगातार यॉर्कर फेंकने की खूबी खासी चर्चा में रही.

टीएनपीएल से आईपीएल की राह

पहले विजय क्लब और फिर रणजी ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन से नटराजन ने राज्य स्तर पर अपनी पहचान बना ली. इसके बाद तमिलनाडु प्रीमियर लीग (टीएनपीएल) ने उनके अंतराष्ट्रीय क्रिकेट करियर की नींव रख दी. इस लीग में डिंडीगुल ड्रैगन्स की ओर से खेलते हुए उन्होंने कई बार शानदार प्रदर्शन किया. अपनी सटीक यॉर्कर डालने की चचाओं के बीच उन्होंने टुटी पैट्रियोट्स टीम के खिलाफ सुपर ओवर में लगातार छह गेंदे यॉर्कर डालकर आईपीएल फ्रेंचाइजीज का ध्यान अपनी ओर खींचा. सटीक यॉर्कर फेंकने की उनकी खूबी की वजह से ही उनकी तुलना डेथ ओवर में यॉर्कर स्पेशलिस्ट माने जाने वाले बांग्लादेशी तेज गेंदबाज मुस्तफि जूर रहमान से की जाने लगी है. तमिलनाडु में हर कोई उन्हें भारतीय मुस्तफिजूर रहमान कहकर बुलाता है.

नटराजन पिछले तीन साल से चेन्नई के मशहूर चेमप्लास्ट क्लब के गेस्ट हाउस में रहकर गेंदबाजी की बारीकियां सीख रहे हैं. इस क्लब में क्रिकेट के मामलों के प्रमुख और पूर्व भारतीय विकेट कीपर भरत रेड्डी कहते हैं, ह्यनटराजन के लिए आईपीएल में बड़ी बोली लगने को लेकर हर कोई हैरान है, लेकिन मैं हैरान नहीं हूं क्योंकि मैं पहले से जानता था कि नटराजन की बड़ी बोली लगेगी.ह्न वे आगे कहते हैं कि आज के दौर में रणजी से लेकर टीएनपीएल लीग हर किसी का टीवी पर लाइव प्रसारण होता है जिससे अब खिलाड़ी पूरी दुनिया की नजरों में आ जाते हैं. रेड्डी के मुताबिक तमिलनाडु प्रीमियर लीग खत्म होने के बाद से उनके पास आईपीएल फ्रेंचाइजियों के फोन आ रहे थे और वे सिर्फ थंगारासु नटराजन के बारे में ही जानना चाहते थे.

मजबूत बनाएगा आफिस में वास्तु

करियर में आगे बढ़ने के लिए हम कड़ी मेहनत करते हैं। यह मेहनत करने में तब और प्रेरणा मिलती है जब हमारा वर्क प्लेस सकारात्मकता और ऊर्जा से भरा हो। आज हम ऐसे कुछ वास्तु टिप्स शेयर करेंगे जो आपके वर्क प्लस का माहौल सकारात्मक और ऊजार्वान बनाए रखने में मदद करेगा...

- ऑफिस में आपके चेयर के पीछे दीवार हो, यह सपॉर्ट का प्रतीक है।
- आपके चेयर के पीछे की दीवार पर माउंटेन की तस्वीर होनी चाहिए। यह मजबूती का प्रतीक होता है।
- वर्क प्लेस में आपके आगे खुला एरिया होना चाहिए, इससे नए विचार आप तक आएंगे।
- कॉन्फ्रेंस रूम में जब जाएं कोशिश करें कि आप दक्षिण-पश्चिम कोने में बैठें और यह एंट्रेस से दूर होना चाहिए
- कॉन्फ्रेंस रूम में टेबल या तो वगार्कार या फिर आयाताकार हो।
- आप अगर पश्चिम में बैठते हैं तो टेबल का ऊपरी हिस्सा शीशे का होना चाहिए।
- चेयर का बैक ऊंचा होना चाहिए
- यह ध्यान रखें कि ऑफिस फर्नीचर लकड़ी के बने हों।
- ऑफिस के पूर्वी दिशा में हमेशा ताजे फूल रखें।

मोमबत्ती के रंगों का कमाल

चीनी वास्तु फेंगशुई में मोमबत्ती या कैंडल की अहम भूमिका बतायी गई है। इसके द्वारा ऊर्जा का संतुलन किया जा सकता है। फेंगशुई में इस ऊर्जा को 'ची' कहते हैं। मोमबत्तियों से प्राप्त ची नकारात्मक ऊर्जा को काट देती है और घर में सकारात्मक ची यानी ऊर्जा की वृद्धि करने के साथ ही आपका भाग्य भी जगाती है। आगे क्लिक करें और पढ़ें किस दिशा में कौन से रंग की मोमबत्ती लगानी चाहिए-

1. घर के उत्तर-पूर्वी कोने में ग्रीन या हरे रंग की मोमबत्ती लगाएं। इससे न सिर्फ घर की सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है, बल्कि पढ़ने वाले बच्चों की एकाग्रता भी बढ़ती है।

2. दक्षिण पश्चिम यानी अग्निकोण में गुलाबी और पीले रंग की मोमबत्ती जलाएं। इससे परिवार के सदस्यों में आपसी प्रेम व सामंजस्य बढ़ता है।

3. दक्षिण भाग को लाल रंग की मोमबत्ती से सजाएं। इससे धन समृद्धि में वृद्धि होती है।

4. नीले रंग की मोमबत्तियां पूर्व या दक्षिण-पूर्व दिशा में ही लगानी चाहिए।

5. घर की उत्तर दिशा में सफेद रंग की मोमबत्ती लगाने से परिवार के सदस्यों में रचनात्मकता बढ़ती है।

योग, लीवर भी स्वस्थ कर सकता है

लीवर हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है जो हमारे द्वारा खाये गए आहार को पचाकर रस बनता है जिससे हमारा शरीर ठीक ढंग से काम करता है। यदि आपका लीवर ठीक तरह से काम नहीं कर पा रहा है तो समझ लीजिए कि खतरे की घंटी बज चुकी है। आपको सावधान होने की जरूरत है। क्योंकि अगर हमारा लीवर खराब हो जाये तो हम जो भी खायेंगे, पियेंगे हमारा लीवर उसे ले ही नहीं पायेगा। लेकिन परेशान न हो क्योंकि बुरी आदतों को छोड़कर और अपने दिनचर्या में सिर्फ इन 3 योग को शामिल कर आप लीवर की समस्याओं से बच सकते हैं।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे देश में कई लोगों का जीवन लीवर की बीमारियों के कारण खराब हो जाता है। लीवर के खराब होने के लिए अल्कोहल का अधिक मात्रा में सेवन, नकली दवाएं और गलत खान-पान आदि कारक जिम्मेदार है। यह सभी चीजें लीवर को डैमेज करती है। तो क्यों न अपने शरीर के इतने महत्वपूर्ण अंग को सही रखने के लिए हम इन बुरी आदतों को छोड़ दें और योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करें।

नौकासन

नौकासन को बोट पोज भी कहा जाता है क्योंकि इस योग में आपका आकार बोट की तरह हो जाता है। यह करने में बहुत ही आसन है हालांकि इस आसन में बहुत संतुलन बनाने के कारण शुरूआत में इसे करना थोड़ा मुश्किल होता है। लेकिन इसे करके आप लीवर से जुड़ी बीमारियों के होने का खतरा कम कर सकते है। यह आपके लीवर को मजबूत बनाता है। यह पोज आपके लीवर को क्लीन करता है साथ ही साथ हानिकारक पदार्थों को भी दूर करता है।

नौकासन करने की विधि

सबसे पहले आप पीठ के बल लेट जाएं। अपने हाथ जांघ के बगल और शरीर को एक सीध में रखें। फिर अपने शरीर को ढीला छोड़े और सांस पर ध्यान दें। अब आप सांस लेते हुए अपने सिर, पैर, और पूरे शरीर को 30 डिग्री पर उठायें। ध्यान रहे कि आपके हाथ ठीक आपके जांघ के ऊपर हो। धीरे-धीरे सांस लें और धीरे-धीरे सांस छोड़ें, इस अवस्था को अपने हिसाब से बनाये रखें। जब अपने शरीर को नीचे लाना हो तो लंबी गहरी सांस छोड़ते हुए सतह की ओर आयें। शुरूआती दौर में 3 से 5 बार करें। नौकासन की यह विधि तनाव दूर करने के लिए बहुत ही प्रभावी है।

कपालभाति प्राणायाम

कपालभाति प्राणायाम कई रोगों के इलाज में फायदेमंद है। यह आपके लीवर के स्वास्थ्य को सुधारता है। इससे कई लीवर समस्याओं जैसे पीलिया, हेपेटाइटिस आदि ठीक होती है। शरीर में एनर्जी का संचार करने और तनाव दूर करने के लिए कपालभाती प्राणायाम करें। इससे पूरे शरीर को सही तरीके से ऑक्सीजन मिलता है।

कपालभाति करने की विधि

कपालभाती प्राणायाम करने के लिए सुखासन, सिद्धासन, पद्मासन या किसी भी आसन में बैठ जायें, कमरी सीधी रखें और दोनों हाथों को घुटनों पर रखें और नजर को सीधा रखें। सांस लेते वक्त नाभि को अंदर की तरफ ले जायें और सांस बाहर करते वक्त नाभि बाहर हो, सांस बाहर आराम से करें। स्थिति सामान्य हो और शरीर सीधा रखें। इसे 3 चक्रों में कर सकते हैं।

इन तीन योग की मदद से आप अपने लीवर को हेल्दी बना सकते हैं। तो देर किस बात की अपने लीवर को स्वस्थ रखने के लिए आज से ही करें ये योग और दूसरों को भी करने के लिए कहें।

साभार : ओन्ली माय हेल्थ।

धनुरासन

इस योग आसन में शरीर की आकृति सामान्य तौर पर खिंचे हुए धनुष के समान हो जाती है, इसीलिए इसे धनुरासन कहते हैं। यह आसन उन लोगो के लिए बहुत फायदेमंद है जो लोग फैटी लीवर रोग से पीड़ित है। यह आपके लीवर को ताकत देता है, उसे उत्तेजित करता है जिसके चलते शरीर में जमा फैट एनर्जी में परिवर्तित हो जाती है और आपका शरीर उसे इस्तेमाल कर पाता है।

धनुरासन करने की विधि

इसे करने के लिए सबसे पहले पेट के बल लेट जाये। फिर दोनों पैर आपस में एक-दूसरे से जोड़ें। दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ें। घुटनों तथा पंजों के बीच में एक फुट का अंतर रख कर दोनों पैरों के टखनों को हाथों से पकड़ें। हाथों के सहारे दोनों पैरों के घुटने, जांघ तथा धड़ को सुविधानुसार एवं क्षमतानुसार ऊपर उठाएं। श्वास सहज रखें। इस स्थिति में आरामदायक अवधि तक रुक कर वापस पूर्व स्थिति में आएं।

आपका
नेशन अलर्ट

आप हासिल कर सकते हैं
30% छूट के साथ

हां, मैं नेशन अलर्ट का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूं

टिक करें	अवधि	कुल अंक	कवर मूल्य (रु.)	आपको देना है (रु)	बचत
☐	5 वर्ष	60	1200	840	30%
☐	4 वर्ष	48	960	720	25%
☐	3 वर्ष	36	720	576	20%
☐	2 वर्ष	24	480	408	15%
☐	1वर्ष	12	240	216	10%

अपने पसंद के ऑफर पर निशान लगाएं
और ग्राहकी फार्म भरकर इस पते पर भेजें

नेशन अलर्ट कार्यालय,
प्लॉट नं. 29, विकासनगर, लखोली
राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ पिन- 491441

चेक/डीडी से भुगतान

मैं "नेशन अलर्ट" के पक्ष में भेज रहा/रही हूं ..... दिनांक : ..... आहरित बैंक (बैंक का नाम).....
चेक/डीडी नं..... (छत्तीसगढ़ से बाहर के चेक के लिए 50/- रुपए अतिरिक्त दें. ऐट पार चेक के लिए लागू नहीं)

अथवा

"नेशन अलर्ट" के बैंक खाते (युनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया, राजनांदगांव : खाता क्रं. 1698050002295)
में अपने नाम से राशि जमा कराएं व हमें सूचित करें।

नाम : ..... पता :.....

शर्त लागू* शहर : ..... जिला : ..... राज्य : ..... पिन नं. : .....

फोन नं. : ..... मोबाइल फोन : ..... ई-मेल : .....

हमसे संपर्क करें

मोबाइल नंबर
97524-11311
97706-56789

E-mail : nationalertcg@gmail.com
Follow Us : www.facebook.com/nationalert

हमसे जुड़ें और रहें अलर्ट
लाईक कीजिए फेसबुक पर नेशन अलर्ट के
पेज को और अपडेट लीजिए खबरों का...

छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया

तरक्की के 13 साल

छत्तीसगढ़ सरकार विकास लगातार

स्वस्थ जीवन खुशहाल प्रदेश

राज्य के सभी परिवारों का निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा

13 वर्ष की उपलब्धियाँ

- शिशु मृत्यु दर-76 प्रति हजार से घटकर 43 प्रति हजार
- मातृ मृत्यु दर- 407 प्रति लाख से घटकर 221 प्रति लाख
- सम्पूर्ण टीकाकरण- 56 प्रतिशत से बढ़कर 74 प्रतिशत
- संस्थागत प्रसव- 18 प्रतिशत से बढ़कर 74 प्रतिशत
- मेडिकल कॉलेज- 02 से बढ़कर 06
- सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र- 114 से बढ़कर 155
- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र- 512 से बढ़कर 790
- उप स्वास्थ्य केन्द्र- 3818 से बढ़कर 5186
- 108 संजीवनी एक्सप्रेस, 102 महतारी एक्सप्रेस, 104 आरोग्य सेवा, 1099 मुक्तांजलि एम्बुलेंस सेवा।
- मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना के अन्तर्गत सभी परिवारों का निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा।
- चिरायु योजना के अन्तर्गत 97 लाख से अधिक स्कूली बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण।
- मुख्यमत्री बाल हृदय सुरक्षा योजनान्तर्गत 6307 और मुख्यमंत्री बाल श्रवण योजना से 112 बच्चे लाभान्वित
- सिकल सेल पीड़ितों के लिए सिकल सेल संस्थान की स्थापना।
- सरगुजा में 100 सीटर मेडिकल कॉलेज प्रारम्भ

आगामी कार्ययोजना

- डीकेएस भवन रायपुर का सुपर स्पेशिएलिटी अस्पताल के रुप में उन्नयन।
- बिलासपुर में राज्य कैंसर अस्पताल की स्थापना।
- नेशनल हाईवे स्थित चिकित्सा महाविद्यालयों में ट्रामा केयर सेन्टर की स्थापना।
- टेली मेडिसिन सुविधा का विस्तार।
- चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर में वायरोलाजी लेब की स्थापना।
- सभी मेडिकल कॉलेजों में ट्रामा यूनिट की स्थापना।

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क